संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : १४ ● ०५ अप्रैल, २०१६ चैत्रकृष्ण त्रयोदशी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य समाज स्थापना दिवस पर

आर्य युवक ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने का संकल्प लें

-देवेन्द्रपाल वर्मा
सभा प्रधान

आर्य समाज की स्थापना १० अप्रैल सन् १८७५ ई० को बम्बई में ऋषि दयानन्द ने की थी। आर्य समाज को स्थापित हुये १४१ वर्ष बीत गये। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना किसी नवीन मत अथवा अपना सम्प्रदाय स्थापित करने के लिये नहीं की थी। आर्य समाज शुद्ध रूप से वेद प्रचारक संस्था है। यदि महर्षि दयानन्द सन् १८७५ को आर्य समाज की स्थापना न करते तो वर्तमान भारत का नक्शा कुछ और ही होता। कांग्रेस इतिहास के लेखक श्री पट्टाभिरमैया ने अत्यन्त सम्मान के साथ कांग्रेस के इतिहास की भूमिका में लिखा है ''जहां-जहां आर्य समाजी कार्यकर्ता पाये गये वहीं वहीं राष्ट्रीयता के उग्र चिन्ह दृष्टिगोचर हुये। आर्य समाज ने लोक मान्य तिलक तथा महात्मा गांधी प्रभृत देश भक्तों के लिये सुदृढ़ मंच तैयार किया। आर्य समाज एक प्रकाश पुंज एवं रत्नों का भण्डार है जहां से निकले एक एक रत्न ने भारत माँ की सेवा की और कर रही है।'' भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास उठा कर देखें तो जितने बलिदान और क्रांतियाँ आर्य समाज के वीरों ने की हैं उतनी अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। लाला लाजपतराय, श्याम जी कृष्ण, स्वामी श्रद्धानन्द अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव, राम प्रसाद बिस्मिल ये सभी विभूतियाँ आर्य समाज की देन हैं। आर्य समाज एक विशुद्ध सांस्कृतिक संगठन है इस संस्था के सदस्य सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक एवं

सांस्कृतिक बातों को सदैव भारतीय ढंग से सोचते और कार्य रूप में परिणित करते थे। कुछ लोग आज कुतर्क करते है कि अब देश में काफी जागृति उत्पन्न हो गई है इस लिये अब आर्य समाज की आवश्यकता नहीं है। ऐसा कहने वालों से मेरा कहना यह है कि क्या देश में धार्मिक अंध विश्वास समाप्त हो गया है? छुआछूत, ढोंग- पाखण्ड, बलात्कार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, भ्रूण हत्या, मासूमों का अपहरण, अश्लीलता जैसी समस्यायें समाज में पुनः बढ़ रही है। जब तक ये समस्यायें रहेंगी तब तक देश की उन्नति नहीं हो सकती। आज देश की महिलायें प्रति दिन पीड़ित हो रही हैं। आज राष्ट्र के नागरिक विघटन कारी तत्वों के कारण चिंतित हैं आज तो आर्य समाज की पहले की अपेक्षा अत्यधिक आवश्यकता है। ये सच है कि आर्य समाज संगठन शक्ति में कुछ स्वार्थी लोगों के कारण शिथिलता अवश्य आयी है परन्तु आज आर्य युवा इन्टरनेट के माध्यम से बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहा है और विधर्मियों को मूंह तोड़ जवाब भी दे रहा है। आज कुछ नव युवक भौतिकता में जी रहे हैं। उनका ध्यान आकर्षित करने के लिये आर्य समाज के उपदेशको, भजनोपदेशकों, लेखकों पत्रकारों, वानप्रस्थी सन्यासियों विद्वानों के दिशा निर्देशों की आवश्यकता है। आज पुनः आर्य बन्धु १० अप्रैल को आर्य समाज स्थापना दिवस मनायेंगे। परन्तु आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब हम अपना आत्म निरीक्षण कर अपने दोषों को दूर कर न्यूनताओं को पूरा करें। अपनी शक्ति को केन्द्रित कर संगठन को दृढ़ और बल शाली बनायें। आर्य समाज के मार्ग दर्शन के लिये ऋषि दयानन्द ने १० नियम बनाये उनके प्रकाश में योजनायें बनाकर देश को पुनः प्रभावित और उन्नत करने योग्य जन आन्दोलन करें।

आर्य समाज के नियम संकुचित नहीं है, साम्प्रदायिक नहीं है, एक देशीय नहीं है अपितु सम्पूर्ण मौलिक मर्यादाओं का सार आर्य समाज के नियमों में समाविष्ट है।

अतः आर्य नव युवकों उठो और देश में एक नया इतिहास रचो राष्ट्र की उन्नति आर्य समाज नहीं करेगा तो कौन करेगा?

●●●

वेदामृतम्

अस्वप्नजस्तरणयः सुशेवाः अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः।
ते पायवः सघ्रयञ्चो निषद्य अग्ने तव नः पान्त्वमूर।।
ऋग्वेद ४.४.१२

ऋषि वामदेवः गौतमः। देवता रक्षोहा अग्निः।
छनदः पंक्तिः व्यूहेन त्रिष्टुप् वा।

(अमूर) हे अमूढ़ (अग्ने) अग्रणी राजन्! (अस्वप्नजः) न सोने वाले (तरणयः) विपत्तियों से तराने वाले, (सु-शेवा) उत्तम सुख देने वाले, (अतन्द्रासः) आलस्य न करने वाले, (अवृकाः) अहिंसक, (अधमिष्ठाः) न थकने वाले, (पायवः) पालन करने वाले (ते) वे (तव) तेरे (राज्याधिकारी गण) (सघ्रयञ्चः) परस्पर सामंजस्य रखते हुए (निषद्य) बैठकर पदासीन होकर (नः) हमारी (पान्तु) रक्षा करते रहे।

हे अग्ने हे विद्या प्रकाश से युक्त प्रजाओं को विद्या प्रकाश देने वाले, राष्ट्र से पाप ताप को भस्म करने वाले अग्नि के तुल्य ऊर्ध्वगामी अग्रणी राजन हे मूढ़ता से सदा दूर रहने वाले राष्ट्र नायक हम चाहते हैं कि जैसे आप स्वार्थ से ऊपर उठकर सदैव प्रजा की हित चिन्ता में संलग्न रहते हैं, वैसे ही आपके राज्याधिकारी गण भी प्रजा के हित चिन्तक हों। वेद के अनुसार उन्हें किन किन गुणों एवं वैशिष्ट्यों से युक्त होना चाहिए वह भी हम प्रकट कर देना चाहते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा के निर्विरोध चुने जाने पर बधाइयों का तांता जारी

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा अपने सभी सहयोगियों सहित निर्विरोध चुने जाने पर उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों के सदस्य व पदाधिकारियों सहित देश-विदेश से बधाई सन्देश अनवरत आने जारी हैं।

प्रधान-श्री वर्मा जी ने सभी लोगों का सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया है।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा

हादसा बड़ा हो या छोटा घायल व मरने वाले आम लोग ही होते हैं। यदि परिवार में कमाने वाला एक ही व्यक्ति है उसका अंग भंग हो जाता है या मृत्यु हो जाती है तो परिवार दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर हो जाता है।

कलकत्ता के बड़े बाजार में विगत ६ वर्षो से निर्माणाधीन फ्लाई ओवर का १०० मीटर लम्बा हिस्सा दोपहर को भीड़-भाड़ के समय अचानक गिरता है जिसमें काफी लोगों की मृत्यु तथा सैकड़ों लोग घायल हो जाते हैं।

राजनीतिक दल एक दूसरे पर दोषारोपण करके अपनी जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करते हैं तो नौकर शाह अलग। लोगों की चीख पुकार का कोई असर इन पर नहीं होता है। यह संवेदन हीनता व ढीठता की चरम सीमा है।

कमीशन के खेल में नेता से लेकर नौकर शाह तक सबके हिस्से में कुछ न कुछ तो हाथ लगता ही है, परन्तु लोगों के हाथ अपंगता व मौत आती है।

अनाथ परिवार की भयावह तश्वीर तब और दुःखदायी हो जाती है जब दो वक्त की रोटी को मोहताज हो जाते हैं परिवार दुःख की पीड़ा तब तक समझ में नहीं आती जब तक खुद उस दौर से न गुजरो।

जो काम डेढ़ वर्ष में पूरा होना था वह नौ वर्षो में भी नहीं पूरा हो सका उस पर भी निर्माणाधीन कम्पनी के जुम्मेदार अधिकारी सारा दोष ईश्वर पर डाल कर स्वयं दोष मुक्त हो जाने की कोशिश में हैं।

खैर लोगों की चीख पुकार व मृतकों के परिवारों के अतिनाद से शासन की कुछ आँखें खुली और निर्माण करने वाली कम्पनी के विरूद्ध विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर कलकत्ता विकास प्राधिकरण के दो अभियंताओं को बर्खास्त कर दिया गया। घायलों व मरने वालों को सहायता राशि भी देने की राज्य सरकार ने घोषणा कर दी है।

एक राष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार भवनों और ओवरब्रिजों के गिरने से सबसे ज्यादा आम लोगों की मृत्यु होती है। पिछले कई सालों से हजारों परिवार तबाह हो चुके हैं। शासन स्तर पर कुछ राशि देकर इतिश्री कर ली जाती है। जाँच रिर्पोट समेट कर रख दी जाती है।

आखिर कब इन हादसों व भ्रष्ट तंत्र से लोगों को मुक्ति मिलेगी। यह विचारणीय प्रश्न है। या यों ही लोगों की जाने जाती रहेगी।

राजनीतिक दल अपनी गोटियाँ बिछाने व घटना की आग में रोटियाँ सेकने के अलावा कब एक आम नागरिक की जान की कीमत समझेंगे।

काश ईश्वर की सार्वभौमिकता व व्यापकता का अर्थ आज लोग समझ जाते हो यह बेई मानी व भ्रष्टाचार रूपी बुराइयां आदि जन्म ही न ले पातीं। चाहे जितने पाप करो दर्शन, जागरण व स्नान आदि करके आसानी से मुक्त हो जायेंगे ही।

जितनी बड़ी बेईमानी उतना ही बड़ा भण्डारा या जागरण। यह लोगों की सोच व पाप की चरम सीमा है।

-सम्पादक

मनुष्य जन्म की पृष्ठभूमि, कारण एवं परम उद्देश्य

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठतम प्राणी है। इसका कारण मनुष्यों में सत्य व असत्य का विवेक कराने वाली बुद्धि होती है जबकि अन्य प्राणियों के पास विवेक कराने वाली बुद्धि नहीं होती। मनुष्य अन्य प्राणियों से कुछ भिन्न एक जाति है जिसमें स्त्री व पुरुष सम्मिलित हैं। आजकल जो जातिसूचक शब्दों का प्रयोग आर्य व हिन्दू करते हैं, उसे जाति कहना वैदिक परम्पराओं एवं जाति शब्द के अर्थ के विरूद्ध है। जाति का सम्बन्ध प्रसव की समानता से जुड़ा है जिसमें सभी मनुष्यों की एक ही जाति सिद्ध होती है क्योंकि संसार के सभी स्त्री व पुरुषों का परस्पर सम्बन्ध होने से मनुष्य सन्तान, पुत्र व पुत्री, का जन्म होता है। इसी प्रकार से पशु जाति है जिसमें गाय, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, लंगूर, बन्दर आदि अनेक प्रकार की उपजातियां है। इसमें अन्तर्जातीय सन्तानोत्पत्ति नहीं होती अर्थात् गाय व बैल से, कुतिया व कुत्ते, घोड़े व घोड़े आदि से होती है अन्यथा नहीं। अतः गाय, भैंस, घोड़ा आदि अलग-अलग पशु जाति की उपजातियां हैं। संसार के सभी मनुष्यों में समान रूप से प्रसव सम्भव होने के कारण सम्पूर्ण मनुष्य जाति एक ही जाति है। हां, गुण, कर्म व स्वभाव से इसके ज्ञानी-अज्ञानी, बली-निर्बल, अध्यापक, वैद्य व चिकित्सक, सैनिक, राजा, सेवक आदि भेद हो सकते हैं। यह जातियां नहीं अपितु गुण-कर्मानुसार वर्ण होते हैं। हम इस लेख में मनुष्य जाति की पृष्ठभूमि पर विचार कर रहे हैं। मनुष्य जाति की पृष्ठभूमि में मुख्य कारण एक चेतन तत्व जीवात्मा व ईश्वर की सत्ता का होना है। यह जीवात्मा अविनाशी, अनुत्पन्न, सनातन, नित्य, अनादि सत्ता है जिनकी सृष्टि में संख्या मनुष्य के ज्ञान के अनुसार अनन्त वा असंख्य हैं। इनके अपने-अपने गुण कर्म व स्वभाव हैं। जीवात्मा एकदेशी, अनुत्पन्न, अनादि, अनुत्पन्न, अविनाशी, अमर, नित्य, कर्म-फल के चक्र में फंसा हुआ, कर्म-फल व प्रारब्ध के अनुसार सुख-दुःख रूपी फलों के भोग के लिए ही भिन्न-भिन्न मनुष्य, पशु, पक्षी व अन्य योनियों में जन्म लेने वाला है। यदि ईश्वर जीवात्मा को जन्म न दे तो फिर इसका अस्तित्व होने के बाद भी यह अनुपयोगी होकर रह जाये। इसका स्वभाव (ईश्वरीय प्राकृतिक नियम) ही यह है कि ईश्वर के द्वारा अपने पाप-पुण्य रूपी कर्मो का फल भोगने के लिए इसका जन्म होता है। जन्म लेने में यह ईश्वर के पराधीन है। मनुष्य योनि में जन्म होने पर यह पाप व पुण्य रूपी कर्म करने में सफल होता है। अन्य इतर योनियां केवल भोग योनियां हैं। ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार और सर्वान्तर्यामी रूप से जीवात्मा के प्रत्येक कर्म का साक्षी होता है। इन कर्मो का सम्मिलित परिणाम ही इसका भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म होना होता है। एक योनि में जन्म लेने के लिए प्रारब्ध कारण बनता है जिसके आधार पर किसी योनि विशेष में इसकी जाति अर्थात् मनुष्य,पशु व पक्षी आदि सहित आयु व सुख-दुख रूपी भोग निर्धारित होते हैं जो ईश्वर की व्यवस्था से इसे मिलते रहते हैं। जीवात्मा का सनातन अस्तित्व, एक देशी व सूक्ष्म तत्व होना, ज्ञान व कर्म इसके स्वभाविक गुण होना और ईश्वर की सभी जीवों के लिए सृष्टि की रचना करने, पालन करने व जीवात्माओं को उनके पूर्व जन्मानुसार भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म देने की सामर्थ्य ही जीवात्मा के मनुष्य व अन्य योनियों में जन्म की पृष्टिभूमि और कारण है। इसके विस्तार से अध्ययन के लिए सत्यार्थप्रकाश सहित वेद, उपनिषद और दर्शन आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये।

जीवात्मा कर्मानुसार जन्म लेता है यह बात तो सृष्टि में प्राणियों के आचार व व्यवहार को देख कर भी सत्य सिद्ध होती है। अब जानने योग्य प्रश्न यह है कि मनुष्य जन्म का उद्देश्य क्या है?मनुष्य जन्म का मुख्य उद्देश्य दुःखों की निवृत्ति है। हम सभी प्राणियों को कर्म करते हुए देखते हैं। यह सभी प्राणी सुख की प्राप्ति के लिए ही सभी कर्म करते हुए प्रतीत होते हैं। प्रातः काल उठकर भ्रमण, आसन, व्यायाम व प्राणायाम करना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है। यह स्वास्थ्य ही सुख का आधार है। यदि स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा तो मनुष्य को दुःख होता है। शरीर आदि व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है और शीघ्र मृत्यु का ग्रास बन जाता है। अतः हमारे सभी कर्म मुख्यतः स्वास्थ्य व सुखों की प्राप्ति व भोग सहित दुःखों की निवृत्ति के लिए ही किये जाते हैं फिर भी संसार का कोई मनुष्य यह दावा नहीं करता कि वह पूर्णतया सुखी है। सुख का परिणाम ही दुःख होता है। अधिक भोजन कर लिया तो उदर विकार होने से दुःख शीघ्र या कुछ विलम्ब से सामने आ जाता है। सुख के लिए धनोपार्जन करने में भी जो पुरुषार्थ किया जाता है वह भी कष्टसाध्य ही होता है। अर्जित धन की रक्षा करना भी सबके लिए सम्भव नहीं होता। अनेक प्रकार के दुःख जो धनिक लोगों में धन व सम्पत्ति के कारण होते हैं, समाज में देखने में आते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी दुःख भी सभी मनुष्यों को समय-समय पर आते जाते रहते हैं, जिनसे बचना दुष्कार है। अतः संसार में मनुष्य जन्म लेकर भी कोई व्यक्ति ऐसा देखने में नही आता जिसे कोई दुःख न हो। सबसे बड़ा और अन्तिम दुःख मृत्यु का होता है। मृत्यु के बाद पुनः जन्म की प्रक्रिया में पिता-माता के शरीर में जाना और वहां दस माह तक शरीर निर्माण की प्रक्रिया में रहने व माता के गर्भ में उलटा लटका रहने सहित मल-मूत्र आदि पदार्थ के सान्निध्य में रहना भी सुख की नहीं दुःख की ही स्थिति है। अतः दुःख की निवृत्ति के सभी सांसारिक साधन उपयोगी नहीं हैं। मृत्यु आदि दुःख से बचने के लिए ही महर्षि दयानन्द व भगवान बुद्ध ने अपने सुखी पारिवारिक जीवन का त्याग कर दुःख के स्वरूप को जानने एवं उसको दूर करने के उपायों को जानकर उनके पालन हेतु कठोर तप किया। महर्षि दयानन्द इस कार्य में सफल हुए। उन्होंने जो ज्ञान व साधन जाने व प्राप्त किये और जिनका उन्होंने अपने निजी जीवन में उपयोग व प्रयोग अर्थात् आचरण किया, उससे सारे संसार को लाभान्वित किया। वह चाहते तो अपना कल्याण करते और समाधि का असीम आनन्द भोगते परन्तु परोपकार के लिए उन्होंने अपनी सभी उपलब्धियों को सार्वजनिक ही नहीं किया अपितु इसका प्रचार व प्रसार करने में अपने जीवन का एक एक क्षण बिना किसी निजी प्रयोजन व लाभ के व्यतीत किया और अन्त में प्राण भी दे दिए।

महर्षि दयानन्द जी ने जो ज्ञान व विवेक प्राप्त किया वह उनके सभी ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। उसका निष्कर्ष है कि जीवात्मा के दुःखों की पूर्ण की निवृत्ति सद्धर्म के पालन और मोक्ष की प्राप्ति में होती है। सद्धर्म मनुष्यों के सत्य कर्तव्यों को कहते हैं। यह सभी सत्कर्तव्य वेदों व वैदिक साहित्य में उपलब्ध होते हैं जिनका सरलीकरण महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य सहित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि व आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों में किया है। इसको संक्षेप में इस प्रकार जाना जा सकता है कि पाप वा असत्य कर्मो का फल दुःख होता है और पुण्य वा सत्य कर्मो का फल सुख होता है। यदि हम सकाम सत्य व पुण्य कर्म भी करेंगे तो भी हमारा एक के बाद दूसरा जन्म होता रहेगा। इसके लिए मनुष्य को वेद विहित सत्य कर्मो को करना है और साथ ही ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना सहित अग्निहोत्रादि कर्म, माता-पिता-आचार्य-गुरू-विद्वान आदि की सेवा व सत्कार एवं सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा का भाव रखते हुए उनके पोषण में सहायक होना है। योग ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना को ही कहते हैं। इसके सिद्ध होने का अर्थ है समाधि में ईश्वर का साक्षात्कार होना। यह ईश्वर साक्षात्कार तभी सम्भव होता है जब

शेष पृष्ठ.....७

आर्य समाज रूपी माँ के सच्चे सुपुत्र –

लाला लाजपत राय

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

लाला लाजपत राय का नाम सुनते ही आँखों के समक्ष सिर पर पगड़ी बान्धे, खादी का कुर्त्ता नीचे धोती पहनकर भारतीय वेशभूषा की गरिमा को चार चाँद लगाते हैं। उनकी वाणी में गम्भीरता है उनकी आँखों में आत्म विश्वास है, चमक है, उत्साह है, प्रसन्नता है जिनके दर्शन मात्र से शान्ति मिलती है ऐसे समाजसेवी देशभक्त मातृ-पितृभक्त, ईशभक्त, गुरूभक्त के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त होकर भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणाश्रोत होते हैं। आपके विषय में एक वाक्य प्रसिद्ध है- ''आर्य समाज मेरी माँ है और आर्य समाज मेरे पिता हैं।'' इसी वाक्य को पूरा करने के लिए ही आपने विचारों की असली सम्पत्ति की सुरक्षा की औरों को करने की प्रेरणा दी तथा सैदव आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के सम्मान की सुरक्षा के लिए अपने जीवन की आहुति देकर देश के लिए बलिदान कर दिया।

आपका जनम पंजाब प्रान्त के फरीदकोट जिले के एक ग्राम ढुढिक में २८ नवम्बर, १८६४ ई. में हुआ था, आपके पिता राधाकृष्ण उर्दू-फारसी के मर्मज्ञ एवं अच्छे अध्यापकों में माने जाते थे इन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं का महनता से स्वाध्याय किया उसका प्रभाव आपके जीवन पर पड़ा कि आप दीन इलाही मोहम्मद की शिक्षा में गहरी आस्था हो गई और एक दिन निश्चय करके मुसलमान बनने का निश्चय कर लिया तथा नमाज पढ़ने के लिए नियमित संकल्प ले लिया और अधिक आश्चर्य की बात है कि रमजान के समय आप पूरे महीने रोजे रखते थे। मात्र इस्लाम कबूल करना ही शेष ही रह गया था उसके लिए भ पूरा मन बना लिया था मौलवी उन्हें प्रतिदिन प्रेरणा देता रहता और एक दिन नियत करके परिवार में अपना आशय अपनी धर्मपत्नी को भी बता दिया उन्होंने बहुत मना किया तथा इष्टमित्रों सम्बन्धियों से भी कहलवाया पर किसी की एक न चली तब कोई क्या कर सकता था केवल प्रभु ही अन्तिम रक्षक है ऐसा मानकर प्रार्थना करती रहीं मस्जिद में जाने का नियत समय आ गया ऐसे समय धर्मपत्नी जी को ऐसा लगा रहा था कि जैसे कोई कसाई गोमाता को कत्ल करने के लिए रस्से से बांधकर ले जा रहा हो बस अन्दर से प्रभु प्रार्थना ही सहरा मान रही थी। उस समय यह बालक गोद में था इसे बच्चे की प्रभु लाज रखों मेरा तो यह बालक भी विधर्मी बन जायेगा कैसे करूं प्रभो ...., मस्जिद की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए बच्चा रो रहा हे और रो-रोकर बुरा हाल है अपने पिता का वस्त्र पकड़कर खींच लेता है मानो प्रभु प्रेरित करके कह रहा है पिता जी कहां जा रहे हो मेरा भी तो ध्यान रखो, अपनी और अपने पूर्वजों की न सही तो कम से कम मेरी तो लाज रख लो, और यही बात उनकी धर्म पत्नी कहती हैं कि अपनी न सही इस बच्चे के बारे में तो सोच लो इसका क्या होगा ?इसकी क्या गलती है ?जो इसे अभी से पैदा होते ही मुसलमान बना रहे हो बच्चा भी बार-बार अपने पिता जी के वस्त्र खींचता हुआ चिल्लाता हुआ रो रहा है और आखिरी सीढ़ी पर चढ़ते-चढ़ते माँ के हाथ से छूटकर गिर जाता है माँ उठाने को प्रयास कर रही है वह पिता की ओर आस भरी दृष्टि से देख रहा है और प्रभु की प्रेरणा पिता के हृदय को द्रवित कर देती है जैसे कह रहा हो तुझे बच्चे पर भी दया नहीं आ रही तू इतना निष्ठुर कैसे हो गया है तेरा ममत्व कहां चला गया पुराने पूर्वजों की अर्जित सम्पदा वैचारिक सम्पदा संस्कारों की सम्पत्ति सम्मान सभी कुछ तो समाप्त हो जायेगा आज विधर्मी बनकर अपने सभी मित्र सम्बन्धी दुश्मन बन जायेगें और इस बच्चे को भी सदा-सदा के लिए अपने पूर्वजों का दुश्मन बना रहा हूँ हाय ! मैं कितना बड़ा पापी होने जा रहा हूँ उसी क्षण मन को संकल्प शक्ति मिली और दौड़कर अपने प्रियपुत्र को जमीन पर रोते हुए बच्चे की भाषा को पढ़ते हुए उठा लिया और कहा कि बेटा चलो अब इधर नहीं घर चलते हैं पर आते-आते मन प्रभुकृपा से एक दम सुदृढ़ हो चुका था और बच्चे के कारण सभी पूर्वजों रिश्तेदारो और मित्रों के सम्मान को भी बचा लिया इसीलिए माता-पिता ने मिलकर प्रसन्नता के आंसुओं से इस बच्चे का नामकरण भी लाजपत कर दिया और इसी लाजपत ने भी अपने माता-पिता को सदा-सदा के लिए अमरकर दिया यह एक संयोग-प्रभु प्रेरणा- भारत का भाग्य अथवा महर्षि दयानन्द सरस्वती का तप त्याग था जो ऐसे पूर्व जन्म के शुभ संस्कारी बालक ने अपने माता-पिता को विधर्मी बनने से बचाकर स्वयं की अमर सेनानी बन गया प्रेरणा पुंज बना यही बालक भविष्य में पंजाब केसरी की उपाधि से सम्मानित हुए- यही महापुरुष आर्य समाज के इतिहास में अमर बलिदानी बने जो अंग्रेजो की लाठियां खाते रहे और भारत माता की जय बोलते रहे यह दृश्य एक बालक देख रहा है अंग्रेजों का यह दमन चक्र बालक के हृदय को अन्दर से झकझोर देता है और वह डी.ए.वी. कालेज लाहौर की पढ़ाई छोड़कर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए मैदान में कूद जाते हैं जो अमर शहीद सरदार भगत सिंह के नाम से प्रसिद्ध प्राप्त करते हैं २३ मार्च, १६३१ को उन्हें फांसी होती है उसी दिन कालेज में एक छात्र पढ़ रहा है उसके अन्तःकरण में एक भाव पैदा होता है अरे ये अंग्रेज कितने दानव हैं दया नाम की चीज नहीं एक युवा क्रान्तिकारी फांसी के फन्दे पर लटका दिया ऐसे राज्य में पढ़कर क्या इनकी गुलामी करनी है मुझे स्वीकार नहीं और वे कालेज की पढ़ाई छोड़कर देश की आजादी का संकल्प लेते है जो बालक भगवान सिंह बाद में आचार्य भगवान देव और स्वमी ओमानन्द सरस्वती के नाम से आजीवन देश और धर्म की सेवा करते हुए अपना जीवन समर्पित करते हैं उनका तपत्याग आज भी हजारों युवकों के अन्तःकरण में प्रविष्ट होकर उन्हें प्रेरित करता रहता है उठो और धर्म का कार्य करो इस प्रभु की व्यवस्था और अन्तः प्रेरणा शक्ति को कौन सौभाग्यशाली है जो अनुभव करे और वेदानुकूल जीवन से स्वयं तथा अन्यों को लाभान्वित कर सके और मुझे पूरा विश्वास है कि यह प्रेरणा निरन्तर चलती रहेगी सृष्टि का प्रवाह जैसे चलता रहता है वैसे ही यह क्रम भी चलता ही रहता है पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जी के जीवन को भी प्रेरणा इसी अन्तःकरण से प्राप्त हुई जो महर्षि दयानन्द जी ने जाते-जाते एक ऐसी ज्योति प्रकाशित कर दी जिसके प्रकाश में हजारों युवकों को प्रेरणा मिली और नारितकता से दूर होकर आस्तिकता का प्रभाव उन्होंने वेदानुकूल वातावरण तैयार करके अपने जीवन को सौभाग्यशाली बनाया तथा एक प्रकाश स्तम्भ बन गए। अस्तु।

बालक लाजपत राय वाल्यकाल में ही महापुरुष और प्रेरणापुंज बन गए जो अपने माता-पिता के लिए भी प्रभु का वरदान सिद्ध हुए यही बालक धीरे-धीरे पढ़ने में अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देते रहे १६ वर्ष की आयु में १८८० में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर आप लाहौर आ गए गर्वनमेंण्ट कालेज से एफ.ए. तथा कानून की मुख्यवादी परीक्षायें साथ-साथ उत्तीर्ण की जो आज ला कहलाता है १८८२ में ही लाहौर में आप आर्य समाज में सक्रिय हो गए तथा ला साईदास जी की प्रेरणा से आप आर्य समाज के सदस्य बन गए पं. गुरूदत्त विद्यार्थी लालाहंसराज जैसे युवक भी इसी कालेज में आपके सहपाठी बने तथा आपके सम्पर्क से आप भी आर्य समाज के सदस्य बन गए और आर्य समाज की प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय सहयोगी बनते हुए अपनी पढ़ाई का भी विशेषध्यान रखते रहे यह समय आयु का ऐसा ही होता है जो कुछ भविष्य की कल्पनाओं में अधिक सक्रिय रहता है ३० अक्टूबर १८८३ को महर्षि दयानन्द जी का अजमेर दीपावली के पावनपर्व पर बलिदान हो गया जिसमें पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जी को उनके अन्तिम दर्शनों हेतु प्रतिनिधित्व का अधिकार मिला था आकर लाहौर में ८ नवम्बर, १८८३ को एक उच्च स्तर की शोक सभा कार्यक्रम लाहौर में किया गया जिसमें सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि महर्षि जी के नाम को स्थाई रखने के लिए उनके नाम पर विद्यालय की स्थापना की जाये जिसमें उन्हीं के विचारों की शिक्षा वेद-संस्कृत हिन्दी के माध्यम से प्रदान की जाये और उसका नाम - डी.ए.वी. स्कूल होगा- (दयानन्द एंग्लो विद्यालय) जो आज पूरे भारत में फैल चुके है कई हजार शाखायें देश में चल रही हैं इसमें लाला लाजपत राय जी मुख्य स्तम्भ बनकर रहे और इसकी उन्नति के लिए कार्य किया।

आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ता प्राप्त करने के लिए एक बैंक की स्थापना आपने कराई जो ''पंजाब नेशनल बैंक'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ आज पूरे देश- नगरों में इसकी शाखायें चल रही हैं। इसका श्रेय भी लाला लाजपत राय जी को ही जाता है। १८८८ में आपने वकालत पास की तथा वकालत प्रारम्भ कर दी हिसार और रोहतक में करने के बाद पुनः लाहौर को हो अपना मुख्य केन्द्र बनाया १८८८ में ही कांग्रेस आन्दोलन से भी आप जुड़ गए प्रथम बार आप इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए १६०६ में आप पं० गोपालकृष्ण गोखले के साथ शिष्ट मण्डल के सदस्य बने और इग्लैण्ड गए। वहां से अमेरिका चले गए और देश की स्वतन्त्रता के लिए अनूकूल वातावरण बनाने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ किया। आपने १६०५ में भी बनारस कांग्रेस अधिवेशन में मान लिया था लोकमान्य तिलक जी एवं बंगाल के नेता विपिन चन्द्रपाल का भी सान्निध्य प्राप्त किया जैसे - आर्य समाज में ३ थे लाजपत हंसराज पं० गुरूदत्त विद्यार्थी इसी प्रकार देश की राजनीति में बाल-पाल-लाला के नाम से त्रिमूर्ति ने प्रसिद्ध प्राप्त की तथा पहले महापुरुष के रूप में आपने प्रसिद्धि प्राप्त की जो पूर्ण स्वतंत्रता के लिए कांग्रेस आदर्श का विरोध

शेष पृष्ठ.....७

टिप्पणी–वर्तमान प्रचलित देवयज्ञ प्रक्रिया पर लेखक ने कुछ अपने भिन्न विचार दिये हैं। विद्वजन इसपर गहन विवेचन करके अपने विचार हमें भेजें जिन्हें हम पाठकों के समक्ष रखेंगे ताकि यज्ञ सही रूप में हो सके–सम्पादक

यज्ञ और अग्नि

–वेद प्रकाश गुप्ता, लखनऊ

गतांक से आगे.....

स्वयं अवलोकन, निरीक्षण परीक्षणों के प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर यज्ञ :– (1) प्रायः यज्ञ से लाभ के लिये लिखा जाता है कि यज्ञ में आहुति किये गये पदार्थ हजारों गुना षक्तिषाली होकर, हवा में फैल कर लाखों लोगों को लाभ देते हैं और इसके लिये प्रायः एक लाल मिर्च के जलाने का उदाहरण दिया जाता है कि एक सूखी लाल मिर्च को जलाने से सैकड़ों लोग छीकं छीकं कर भयंकर रुप से परेषान हो जाते हैं। परतुं यह नही लिखा जाता है कि इस एक लाल मिर्च को सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–11 के पृश्ठ 267 पर लिखे चूल्हे की ज्वाला जैसी लिखी हुई "लौयुक्त अग्नि" में जलाने से संभव है अथवा सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–10 के पृश्ठ 216 जैसी लिखी हुई "लौरहित अग्नि" में जलाने से संभव है। अनुभव एंव प्रत्यक्ष प्रमाण के अनुसार एक लाल मिर्च को पीसकर हवा में उड़ाने से कुछ ही लोगों को आँख, नाक में इसकी तीक्ष्णता लगती है। परन्तु इसे सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–10 के पृश्ठ 216 जैसी लिखी हुई "लौरहित अग्नि" यानी अंगारों की अग्नि में डाल कर, बगैर लौ के साथ जलाये जाने पर, या तवा आदि पर भूना जाने पर इसके रसायन गर्म होकर वाष्प बनकर, धुवाँ के रूप में करोड़ों अरबों अणुओं यानी सूक्ष्मतम कणों में अलग अलग होकर कर हवा में फैलने से सैकड़ों लोगों को इसकी तीक्ष्णता लगने से छीकं छीक कर बहुत परेषान हो जाते हैं। जब इसी तरह के एक सूखे लाल मिर्च को सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–11 के पृश्ठ 267 पर लिखे चूल्हे की ज्वाला जैसी लिखी हुई "लौयुक्त अग्नि" में डाल कर, लौ के साथ जलाये जाने पर मिर्च के रसायन भी लौ के साथ जल जाते हैं, और अधिकांश भाग कार्बन डाईआक्साइड गैस आदि बनकर नष्ट हो जाता है। तब लोगों को मिर्च की तीक्ष्णता नही लगती है। इसे स्वयं देखने परीक्षण करके देखा जाये कि जब एक चौथाई ग्राम के लाल मिर्च के धुवाँ यानी मूल रसायन के वाष्प से सैकड़ों लोगों को तीक्ष्णता लगती है, तो इसी प्रकार आधार पर 2 – 5 ग्राम वजन के देशी घी के धुवाँ यानी मूल रसायनों के वाष्प से सैकड़ों लोगों को भरपूर सुंगधं व अन्य लाभ मिलेगा या नही? उत्तर, निशचित रुप से "हाँ" होगा। इसे स्वंय घर में करके सत्यापित किया जा सकता है। इसे स्वंय करने के लिये एक सूखी लालमिर्च को चिमटी आदि से पकड़ कर, लौयुक्त अग्नि या घर में जलते गैस के लौ में ले जाकर लौ के साथ जलायें। आप को मिर्च की तीक्ष्णता न के बराबर लगेगी। अब पुनः इसी तरह के एक सूखी लालमिर्च को चिमटी आदि से पकड़ कर लौरहित अग्नि यानी कोयले या कंडे की अग्नि में डाल कर, या तवा आदि पर भून कर या घर में जलते गैस के लौ से करीब 4 से 5 इचं ऊपर रखकर तेज गर्म कर वाश्प यानी धुवाँ करें। केवल इस एक लाल मिर्च के वाश्प से आप को आस पास के सैकड़ों लोगों का छींकते छींकते बुरा हाल हो जायेगा। आर्यसमाजियों द्वारा यज्ञ के लाभ के लिये प्रायः इसी लाल मिर्च का उदाहरण दिया जाता है और डा॰ राम प्रकाश जी के पुस्तक में भी लिखा है। इससे यह सोचें कि "लौयुक्त अग्नि" में जलाने से एंव "लौयुक्त अग्नि" में जलाने से" लाल मिर्च के तीक्ष्णता मे इतना ज्यादा अतंर होने के क्या कारण है?इससे यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि लौ के साथ जलाने की अपेक्षा वाश्प यानी धुवाँ के साथ जलाने पर लाल मिर्च की तीक्ष्णता हजारों गुना ज्यादा होती है। यही तथ्य यज्ञ पर भी लागू होता है। इसी प्रकार "लौयुक्त यज्ञ" के अपेक्षा "लौरहित यज्ञ" यानी "वाश्पयुक्त यज्ञ" यानी "धुवाँयुक्त यज्ञ" हजारों गुना अधिक लाभदायक है और इससे मूल रसायनें हवा में फैलती है।

(2) गुग्गुल पेड़ों से निकाला गया राल यानी रेजिन होता है। नवभारत टाइम्स दि0 28.11.11 के अंक में प्रकाशित, डा0 एस0वी0 नैथानी, फारेस्ट रिसर्च इंस्टिट्यूट देहरादून के द्वारा किये गये शोधों के अंश में यह लिखा है "गुग्गल का धुवाँ जहॉ–जहॉ जाता है वहाँ पर कीटाणु नष्ट हो जाते है और हवा शुद्ध हो जाती है। इसके अलावा यह आर्थराइटिस, दिल की बीमारी, जोड़ो व मोच के दर्द आदि में यह रामबांण का काम करता है।" इसमें लौ के साथ जलाने को नही लिखा है, यानी इससे कोई लाभ नही मिलेगा। यही बात यज्ञ पर भी लागू होता है।

(3) श्री सुरेश चंद्र त्यागी द्वारा लिखित लेख "प्राकृतिक और सांस्कृतिक पर्यावरण–प्रदूषण को नथाने के वैदिक उपाय–" जो आर्य मित्र के 2 सितम्बर 2012 के अंक में छपा है, जिसमें यज्ञ के लाभ व अन्य बातें लिखी है। यह भी लिखा है कि रशिया के वैज्ञानिक ने एक पुस्तक में लिखा है कि अग्नि में डालने से उत्पन्न होने वाला धुवाँ अणु विकर्ण के प्रभाव को दूर करने में मदद करता है। हवन कुंड में डाला गया घी यज्ञीय प्रक्रिया से सूक्ष्म होकर शक्तिशाली बनकर अनेक मनुष्यों, पशु, वनस्पतियों आदि के लिये लाभदायक बन जाता है। फ्रांस के वैज्ञानिक लिटवर्ट का कहना है कि शक्कर के दहन से उत्पन्न होने वाला धुवाँ पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति रखता है।

(4) यह ध्यान देना है कि वर्तमान में देशी घी व अन्य आहुति पदार्थ गुग्गुल, अगर, तगर, केशर आदि बहुत महगीं हैं और पहले भी बहुत महगीं रही हैं। प्रचलित "लौयुक्त यज्ञ" के मात्र एक समय के यज्ञ के लिये न्यूनतम मात्रा लगभग 100 ग्राम देशी घी व अन्य सामग्रियों की लागत लगभग 150 – 200 रुपये प्रतिदिन के दर से व्यय करना, आर्थिक रुप से उच्च मध्यम श्रेणी मनुष्यों के लिये भी पहुँच से बाहर है। क्या वेद जैसे ईश्वरकृत पुस्तक में ऐसा आदेश हो सकता है? कदापि नही। "धुवाँयुक्त यज्ञ" से इतने ही लाभ के लिये 2– 5 ग्राम देशी घी व अन्य सामग्रियों लगभग 5–15 रुपये प्रतिदिन के दर से व्यय करना सभी के लिये आसान होगा। क्या यही उचित नही है? अतः आर्थिक दृष्टि से भी "वाश्पयुक्त यज्ञ" ही अत्यधिक लाभकारी है।

(5) प्रचलित "लौयुक्त यज्ञ" में समिधा को घी में डुबो कर अग्नि में डालने का उपयोग मात्र लौयुक्त अग्नि को तेज जलाने के लिए ही होता है। यह सोचने समझने की बात है कि गाय का घी एंव हव्य सामग्री आज भी बहुत ही महंगे है और हमेशा ही महंगे रहे हैं। क्या इसका उपयोग मात्र अग्नि को तेज करने प्रज्वलित करने को वेद जैसे ईश्वरीय पुस्तक में निर्देश उचित है कदापि नहीं? जबकि अग्नि को तेज प्रज्वलित करने के अन्य विकल्प भी हैं। यदि हम अग्नि के परिभाशा पर विचारें तो कोयले एवं कंडे की लौरहित अग्नि भी प्रज्वलित अग्नि ही होती है।

(6) अब हम प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर जानें कि किसी पदार्थ को सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म कैसे कर सकते हैं क्योंकि यज्ञ का मुख्य ध्येय घी एंव हव्य के मूल रसायनों को सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म करके हवा में फैलाना है जिससे वह अधिसंख्य लोगों को नसिका से ग्रहण हो सके। हम घर में मसालों को सूक्ष्म करने के लिए, पीस कर बारीक यानी सूक्ष्म कर लेते है। गेहूं को पीस कर सूक्ष्म यानी आंटा या मैदा बना लेते हैं। पानी को सूक्ष्म कर हवा में फैलाने के लिए गर्म कर उबालते रहने पर भाप बन कर पानी हवा में फैल जाता है। इसी प्रकार घृत को सूक्ष्म कर हबा में फैलाने के लिए गर्म कर उबालते रहने पर भाप यानी वाष्प बन हवा में फैल जाता है और अंत में कुछ भी षेश नही बचेगा। यज्ञ हव्य को यदि तवा या कढाई में गर्म करते रहने यानी भूनने पर इसके रसायन गर्म होकर भाप यानी वाष्प बनकर हवा में फैलकर अपनी सुगंध बिखेरेंगे और लोगों को नासिका से ग्रहण होंगे। ऐसे ही हमें यज्ञ के लिए वह अग्नि चाहिए जो घृत एवं हव्य के रसायनों को इतना ऊष्मा देकर गर्म कर दे, कि यह भाप, वाश्प बन कर सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म होकर हवा में सुगंधियों के साथ फैल सके, जो अधिसंख्य लोगों को नासिका से ग्रहण होकर लाभ दे सके, जो केवल कोयले या कंडे की अग्नि से ही हो सकती है।

(7) अनुभव प्रत्यक्ष प्रमाण, स्वयं अवलोकन किया जा सकता है कि किस तरह का यज्ञ ज्यादा लाभकारक होता है । इसे करने यानी के लिये लगभग 1 ग्राम घी व हवन सामग्री के मिश्रण को "लौयुक्त अग्नि" में जलायें तथा देखें कि इनकी कितनी सुगंध कितनी दूर तक मिलती है। फिर यही 1 ग्राम हवन सामग्री मिश्रण कोयले के या लकड़ी के जलने के बाद, कोयले की आग या कंडे की "लौरहित अग्नि" में डाल कर केवल सुलगायें, धुवाँ होने दें तथा देखें कि अब इसकी सुगंध कितनी दूर तक फैलती है व सुगंध मिलती है?इसमें अत्यधिक और बहुत दूर तक सुगंध मिलेगा। इन दोनों विधियों का निरीक्षण, अवलोकन करें, कि किस विधि सें अधिकाधिक लोगों को घी हवन सामग्री का सुगंध मिलती है यानी हवन सामग्री के पदार्थों के वाष्प लोगों के नाक द्वारा ग्रहण होता है तथा कितने दूर तक कितने समय तक सुगंध मिलती है? अब यह भी सोचें कि दानों विधि में अतंर क्यों और किन कारणों से है तथा इसमें कौन सी विधि लाभदायक हो सकती है और कौन विधि हानिकारक है तथा किन कारणों से हानिकारक है। विधि दो ही ज्यादा लाभदायक पाया जायेगा।

(8) यह संज्ञान लेवें कि धूप बत्ती अथवा अगरबत्ती को किन कारणों से लौ के साथ जलाया नही जाता है? बल्कि सुलगाते हुए धुवाँ किया जाता है जिससे ही उसकी सुगंध यानी खुशबू प्राप्त होती है, अन्यथा लौ के साथ जलाने पर सुगंध बिलकुल प्राप्त नही होती है। पदार्थ विद्या यानी रसायन शास्त्र के अनुसार तथा स्वयं देखने महसूस करने पर, क्या यही सिद्धातं लौरहित एंव लौयुक्त यज्ञ पर लागू नही होता है?

(9) यह संज्ञान लेवें कि किन कारणों से मच्छर कीड़ों को भगाने के लिये नीम, लोहबान, क्वायल आदि को सुलगा कर धुवाँ किया जाता है तथा कई रसायनों रुम फ्रेशनर आदि कैमिकल स्प्रे कर हवा में फैलाया जाता है? परतुं लौ के आग में जलाया नही जाता है। इसी प्रकार दशकों पूर्व, जब कोई घर में बीमार होता था, तब नीम की पत्ती, सरसों का धुवाँ किया जाता था परतुं कभी लौ के आग में डाल के लौ साथ नही जलाया जाता था। भिन्न भिन्न मसालों, फूलों, अनाजों, पकवानों के भिन्न सुगंध क्यों होते हैं व उनका कितना भार हवा में उड़ता है कि आसपास के लोगों को अपने आप या सूंघने पर सुगंध मिलती है?

(10) यह संज्ञान लेवें कि किन कारणों से कपड़ा, चमड़ा, प्लास्टिक या कागज जब कहीं सुलगता है तब उसके रसायनिक गुण के अनुसार उसका गंध दूर दूर तक हवा में फैल जाता है और काफी दूर उपस्थित लोग केवल गंध के आधार पर, बगैर देखे बता देते हैं कि इनमें से कौन सा सामग्री सुलग यानी जल रहा है? और कई बार आग प्रज्वलित हाने के पहले यानी आग लगने के पहले ही बुझा दिया जाता है। प्रत्येक पदार्थ के रसायन भिन्न भिन्न होते हैं, अतः उनके गंध अलग अलग होते हैं, परंतु जब कोई भी सामग्री लौ के साथ जलती है, तब उसके सुगंध नही निकल पाते हैं बल्कि जल कर नष्ट हो जाते हैं, और आसपास के लोगों को किसी सामग्री की सुगंध अथवा दुर्गंध नही आती है। यदि कुछ भाग लौ के रुप में जलता है तथा कुछ भाग सुलग कर जलता है, तब सुलगने वाले भाग का ही गंध हवा में फैलता है।

(11) यह भी संज्ञान में लाना है कि देशी घी एवं हव्य के प्रत्येक घटकों की वाष्पों यानी धुवाँ की सुगंध भिन्न भिन्न होती है और वही सुगंध, धुवाँयुक्त यज्ञ में भी प्राप्त होगी और अधिसंख्य लोगों को नसिका से ग्रहण होगी। यदि कोई घी या हव्य सामग्री नकली होगा तो असली सामग्री की वांछित सुगंध नही मिलेगी एंव लोगों को यह भी विषेश कर पता चल जायेगा कि देषी घी एंव कौन कौन सामग्री नकली है। लौ के साथ जलते यज्ञ में सुगंध न होने अथवा बहुत ही कम होने पर पता ही नही चलता है कि जल रही सामग्री नकली है या असली है। ऐसी स्थिति में यह सोचने की बात है कि ऐसा यज्ञ कैसे लाभदायक होगा?

(12) वर्तमान में अधिकाषं घरों में लकड़ी एंव कोयले का चूल्हा नही जलता है, अतः इसकी अग्नि नही मिल सकती है। इसके लिये भी अध्ययन करना है। सत्यार्थ प्रकाष समुल्लास 3 में यज्ञ से संबधित प्रष्न– तो मन्त्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है? इसके उत्तर में लिखा है कि "मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने का लाभ विदित हो जाये और मन्त्रो की आवृति होने से कण्ठस्थ रहे। वेद पुस्तकों का पठन पाठन और रक्षा भी होवे।" इसी कारण निर्देषित कर्मकांड भी आवष्यक है। यदि लकड़ी अथवा कोयला न मिल सके, तो घरों में यज्ञ, हवन प्रतिदिन गैस के सबसे छोटे बर्नर या बिजली हीटर या इंडक्सन प्लेट हीटर के ऊपर 5 – 6 इंच गोल हल्के लोहे या स्टील की प्लेट रख कर गर्म कर किया जा सकता है। इस पर धुवाँ देखते रहें, जब बहुत धुवाँ उठने लगे यानी हवन सामग्री लौ के रुप मे जलने को हो, तो उसके पहले ही गैस कम से कम एंव बिजली को स्विच से बीच बीच मे बंद करते रहें। गैस, हीटर का आंच इस प्रकार नियंत्रित किया जाय कि हवन सामग्री लौ के रुप में न जल सके। हीटर के जलने के तापमान को नियंत्रित करने के लिये, इसमें 250 या 500 वाट का कूलर पंखे का इलेक्टानिक स्पीड रेगुलेटर लगाया जा सकता है। सामान्य बिजली हीटर 1000 से 2000 वाट का होता है, जिसका आंच बहुत तेज होता है। यदि इसमें 1000 वाट के 1 एलीमेंट के बदले 2 एलीमेंट (एक के बाद एक यानी सिरीज में) लगा दिया जाय तो यह 250 वाट का हीटर बन जायेगा, जिस पर 5 से 10 ग्राम की आहुति देकर प्रतिदिन यज्ञ, हवन किया जा सकता है। अंतिम आहुति देने के बाद जैसे ही धुवाँ बंद होने को हो तभी, सुइच बंद कर देना चाहिये। जो कोयला राख बचे उसे खेतों आदि में डाल देना चाहिये। देखिये इसकी सुगधं कितनी आनदंदायक होती है। इस तरह के यज्ञ को आवष्यक कर्मकांड करते हुए किया जा सकता है।

(13) कुछ लोग कहते हैं कि यज्ञ में लौ के साथ जलाया गया सामग्री वरुण देवता आदि, अग्नि द्वारा सीधे परलोक को ले जाया जाता है। यह तर्कसंगत नही है क्योंकि पृथ्वी के चारों ओर केवल 4–5 हजार मीटर ऊँचाई तक ही हवा बादल आदि है। हवा यानी वरुण भी उसके ऊपर नही है तथा वरुण कोई चेतन नही है फिर भी यदि इसे सही मान लें तो भी घी व हवन सामग्री को जलाने से यह नष्ट ही होगा। धूप बत्ती अगर बत्ती की तरह घी व हवन सामग्री के रसायनों को सुलगाने से ही दूरस्थ स्थानों को यह पहुँच सकता है।

यज्ञ विज्ञान की पुस्तकें एंव षोध पत्रिकायें – यज्ञ प्रक्रिया एंव यज्ञ महिमा पर कई पुस्तकें है, परतुं मेरे ज्ञान में वैज्ञानिक आधार पर दो पुस्तकें, यज्ञ चिकित्सा पर दो पुस्तकें एंव कई सस्थाओं जैसे गायत्री परिवार हरिद्वार, गुरुकुल कागंड़ी विष्वविद्यालय हरिद्वार एंव राश्ट्रीय वनस्पति षोध संस्थान लखनऊ आदि कई संस्थाओं की षोध पत्रिकाएं हैं। इन सभी पुस्तकों के लेखकों एंव षोध कर्त्ताओं ने यज्ञ से होने वाले लाभों के

शेष पृष्ठ.....५

पृष्ठ.....४ का शेष

लिये देषी घी एंव हव्य के मूल रसायनों से मिलने वाले लाभ के लिये "सामग्री अध्याय" लिखा है जिससे इन सभी पुस्तकों के लेखकों एंव षोध कर्ताओं को पता था कि घी एंव हव्य के मूल रसायन अमृततुल्य हैं फिर भी इसे भुलाकर, इन सभी विद्वानों ने प्रचलित प्रक्रिया को प्रतिपादित करते हुए "लौयुक्त यज्ञ" हेतु "दहन अध्याय" भी लिखा है तथा दहन होने से बनने वाले हानिकारक जहरीले रसायनों को ही लाभदायक लिखा है। अतः सभी पुस्तकों एंव षोधों में भयकंर गलतियाँ हैं कि जब समस्त घी एंव हव्य पदार्थों को सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–11 के पृश्ठ 267 पर लिखे चूल्हे की ज्वाला जो सबको भस्म नश्ट कर देती है, में आहुतियाँ देकर नश्ट कर दिया जायेगा तो घी एंव हव्य के मूल रसायनों के सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म कंण हवा में फैलेगें ही नही अर्थात इनसे वांछित लाभ बिलकुल नही मिलेगा। यही कारण है कि प्रचलित "लौयुक्त यज्ञ" के आसपास भी घी एंव हव्य के मूल रसायनों की नगण्य सुगंध ही फैलती है। यदि यज्ञ वास्तिविकता में सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–10 के पृश्ठ 216 जैसी "लौरहित अग्नि" में ही किया जाय तब ही लोगों को वास्तिविक लाभ मिलेगा क्योंकि "लौरहित अग्नि", में डालने से घी एंव हव्य की मूल रसायनें बढ़ते बढ़ते भाप यानी वाश्प बन कर हवा में फैलती हैं। रसायनशास्त्री डा0 राम प्रकाश द्वारा लिखित पुस्तक "यज्ञ विमर्श" तथा डा॰ स्व॰ सत्य प्रकाश द्वारा लिखित पुस्तक "केमेस्ट्री इन यज्ना" जो अग्रेजी में है, में "लौयुक्त यज्ञ" को गलत तथ्यों को लिखकर लाभदायक लिखा है। इसके अतिरिक्त यज्ञ एंव यज्ञ चिकित्सा संबधी अन्य सभी पुस्तकों, सभी षोधों में भी "लौयुक्त यज्ञ" के लिये ही लिखा है। इन सभी पुस्तकों और षोध पत्रों में लिखे विबरणों के अनुसार "लौयुक्त यज्ञ" से जो रसायनें हवा में फैलती हैं, उनके गुणों के अध्ययन के अनुसार, उनमे अधिकाश, हानिकारक व जहरीली हैं एंव उनमें आवश्यक सुगंधित, पुष्ठकारक, मीठी तथा नसिका से ग्रहण करने योग्य तथा आहुति के मूल सामग्रियों के सूक्ष्मतम कण की रसायनें नही हैं। इन्ही पुस्तकों एंव षोधों में "सामग्री" अध्याय में यज्ञ सामग्रियों में विद्यमान उड़नशील रसायनों के नाम व गुण भी लिखे हैं, वह सब सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–10 के पृश्ठ 216 जैसी "लौरहित अग्नि" में आहुति कर "वाश्पयुक्त यज्ञ" से ही मूल रसायनों के वायुरुप यानी वाश्परुप में परिवर्तित होकर हवा में फैलाया जा सकता है, जिनमें सुगंधित, पुष्ठकारक, मीठी एंव औषधिये पदार्थ बहुत ज्यादा लाभदायक तथा नसिका से ग्रहण करने योग्य है जो स्वामी दयानंद जी द्वारा लिखित वेदों के भाष्य एंव सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 मे लिखे लक्ष्य के अनुरुप हैं।

उपरोक्त यज्ञ विज्ञान की पुस्तकों एंव षोध पत्रों में लिखे विवरणों के अनुसार "लौरहित अग्नि" के वाश्पयुक्त यज्ञ से हवा में जो रसायनें यानी गैसें हवा में फैलती हैं, उनमें देशी घी के 10 घटक रसायनें – औलिक अम्ल, पामिटिक अम्ल, स्टिऐरिक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल, लीनोलीईक अम्ल, ब्यूटिरिक अम्ल, लैरिक अम्ल, कैप्रिलिक अम्ल, हेक्सानोइक अम्ल, ग्लिसराल एंव कपूर के 8 घटक रसायनें – यूजिनाल, पइनीन, सीनिओल, सैफ्रोल, टर्पिनिआल डाइपैंटीन, सेस्क्वीटरपीन, फैलेड्रीन और अन्य हव्य सामग्रियों के 10 घटक रसायनें – एंथाल, बेारनिओल, थायमाल, फुरफुराल, सैंटालाल्स, मिरिस्टिक, सेड्राल, काउमैरिक

अम्ल, कारवाक्राल, सैफ्रोल तथा गुग्गुल, अनाजों, मिष्ठानों आदि सामग्रियों के कुल लगभग 100 रसायनें पूर्ण मात्रा यानी इनमें कुछ भी नश्ट नही होती, हवा में फैलती हैं। इनमें रोगाणुनाशक 24, सुगंधित 14, औषधीय 9, कीड़ों को भगानेवाला 3, कवकनाशक 11, कीड़ानाशक 3, कफ नाशक 4, दर्द नाशक 3, सूजन नाशक 4, घाव भरनेवाला 3, मरोड़नाशक 2, मूत्रवर्धक 2, पाचन बढ़ाने वाला 2, दिमाग को शांत करने वाला 2, जहरीला व नशीला जहर 0, तीखा गंध बदबूदार गंध 0, त्वचा गला व आंख मे जलन व घाव करने वाला रसायन 0 हैं।

उपरोक्त यज्ञ विज्ञान की पुस्तकों एंव षोध पत्रों में लिखे विवरणों के अनुसार, लौयुक्तयज्ञ से कौन से कितने–कितने रसायन उतपन्न होते हैं का अनुमान करना कठिन हे क्योंकि (क) यज्ञकुण्ड में तापांश समान नही रहता । तापांश भिन्नता के कारण एक ही हव्य द्रव्य भिन्न–भिन्न पदार्थ बना सकता है। (ख) यह भी सम्भव है कि रसायनिक क्रिया पूर्ण होने से पूर्व ही जो पदार्थ बने है, वे आपस मे मिलकर कोई अन्य पदार्थ बना ले या उड़कर वायु में मिल जाएँ। (ग) यह आवश्यक नही कि प्रत्येक आक्सीकरण सदा पूर्ण ही हो जाए, क्योंकि वायु की मात्रा न्यूनाधिक होती रहती है। फिर भी यज्ञ के द्वारा उत्पन्न होने वाले पदार्थो का अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। हां, यह निश्चय करना कठिन है कि कितनी सामग्री डालने से कौन–सा पदार्थ कितनी मात्रा में उत्पन्न होगा। जिन रसायनों के बनने का अनुमान है वह हैं, कार्बन डाइआक्साइड गैस, ग्लिसर ऐल्डिहाइड, ग्लिसरिक अम्ल, ग्लाई आक्सल, पाइरूविक एलड़ीहाइड, एक्राइलिक अम्ल, एथीलीन, प्रोपेन, टार्टरोनिक अम्ल, ग्लाइकाल एलडीहाइड, कैप्रोनिक एल्डीहाइड, वैलेरिक एल्डीहाइड, बूटेन, ईथेन, एसीटिक अम्ल, मेथैन, बूटाडीन, मीसोआक्सैलिक अम्ल, आक्सैलिक अम्ल, हाइड्रोक्सी प्रोपिआनिक अम्ल, मिथाइल एलकोहल, ग्लाइकालिक अम्ल, एक्रोलीन, फार्मालडिहाइड, कार्बोनिक अम्ल, इथनाल अलकोहल, ग्लाइकालिक अम्ल, फार्मिक अम्ल, एसीटालडहाइड, एसीटिलीन, एसीटोन, ग्लाईनाल, कुल 32 है जिसमे मुख्यतयाः लगभग 90–95 प्रतिषत कार्बन डाईआक्साइड गैस बनता है, जो रगंहीन, गंधहीन हवा को दूशित करने वाला होता है, बाकी 5– 10 प्रतिषत में अन्य गैसें बनती हैं। इन समस्त गैसों में रोगाणुनाशक 3, सुगंधित रसायन 1, औषधीय 2, कीड़ों को भगानेवाला 2, कवकनाशक 2, कीड़ानाशक 2, कफ नाशक 0, दर्द नाशक 0, सूजन नाशक 0, घाव भरनेवाला 1, मरोड़नाशक 0, मूत्रवर्धक 0, पाचन बढ़ाने वाला 0, दिमाग को शांत करने वाला 0, जहरीला व नशीला जहर 5, तीखा गंध 1, बदबूदार गंध 5, त्वचा, गला व आंख मे जलन व घाव करने वाले रसायन 3 हैं।

लौरहित अग्नि मे यानी वाश्पयुक्त यज्ञ में जिन पदार्थों की आहुतियाँ दी जाती है, उन सब में स्थिति समस्त उड़नशील पदार्थ की पूर्ण मात्रायें वाष्प बन कर हवा में फैलती हैं, कुछ भी नष्ट नही होती हैं। अतः उपरोक्त विवरणों के आधार पर, "लौरहित यज्ञ" से हवा में फैलने वाले रसायनों, गैसों की लाभदायक गुणों एंव मात्राओं की तुलना करने पर हम पाते हैं कि "लौरहित यज्ञ" से, समस्त गुणों जैसे रोगाणुनाशक, एंटीसेप्टिक, दर्दनाशक, रक्तस्त्राव रोकने वाला, सूजननाशक, कवकनाशक, मरोड़नाशक, कफनाशक, दिमाग को शांत करने वाला आदि के समस्त लाभ व मात्रांए "लौयुक्त यज्ञ" की अपेक्षा हजारों गुना ज्यादा होती है।

अन्य तथ्यः– (अ) यह प्रष्न उठता है कि यज्ञ में अग्नि की आवष्यकता किस प्रयोजन के लिये है? अग्नि का एक मात्र प्रयोजन आवष्यकता यह है कि वह घृत एंव हव्य सामग्रियों के उडनषील रसायनों को गर्म करके वायुरुप यानी वाश्प में परिवर्तित कर हवा में धीरे धीरे दूर दूर तक फैलाये जिससे यज्ञ के रसायनो की मात्रा, यज्ञ के आसपास उपस्थिति लोगों के नाक द्वारा ग्रहण करने की सहनषीलता के सीमा के अंदर हो तभी यह लाभदायक एंव आनदंदायक होगा। इसी कारण मंत्रो को पढ़ते हुए अंतरालों पर आहुतियां देने का प्राविधान है। यदि यज्ञ वाश्प बहुत सघन हो जायगा तो लोगों को छींकने खांसने से बहुत असुविधा होगी। जैसे लोगों की भोजन करने की, विभिन्न औशधियों की एक औसत मात्रा होती है और ज्यादा मात्रा हानिदायक होती है। जब हम सुंगधियों, सेंट को धीरे धीरे कुछ अंतरालों पर सूघंते हैं तभी प्रिय लाभदायक लगता है। यदि हम सुगंधियों की षीषी को दोनों नाक में लगा कर लगातार सूघंते रहें तो 10–15 सेकेडं के बाद ही यह बहुत कश्टदायक हो जायगा। इसी कारण हम अनजाने में वाश्पयुक्त यानी धुवाँयुक्त यज्ञ को हानिदायक समझ लेते हैं। ऐसे में घृत के आहुति की अलग से आवष्यकता नही है। मात्र घृत मिश्रित हव्य ही समुचित है। चूंकि वाश्पयुक्त यज्ञ में आहतियों की पूरी की पूरी मात्रा वाश्प बन कर हवा में फैलती है, कुछ भी नश्ट नही होता है। यहां यह विशेष उल्लेख करना है कि "लौयुक्त यज्ञ" से जो लाभ लगभग 300– 500 ग्राम देशी घी व इतने ही सामग्रियों से मूल रसायनों की प्राप्ती होती है, वही लाभ "वाश्पयुक्त यज्ञ" के लगभग 20– 40 ग्राम देशी घी व सामग्रियों के मूल रसायनों से ही प्राप्ती होती है, जिसे स्वयं करके अवलोकित होकर सत्यापित सत्यापित कर सकते हैं। अतः घृत एंव हव्य की बहुत कम मात्रा यानी "लौयुक्त यज्ञ" में प्रयुक्त मात्रा की लगभग दसवें भाग की मात्रा से ही भरपूर यज्ञ का लाभ "लौरहित यज्ञ" से मिलेगा। वाश्प यानी धुवाँयुक्त यज्ञ में यह विषेश ध्यान देना होगा कि देषी घी एंव समस्त सामग्रियाँ षुद्ध ही हों, अन्यथा वांछित लाभ नही मिलेगा। यदि कोई सामग्री दुर्गधिंत जहरीला होगा तो हवा में जहरीली दुर्गधं फैलेगी।

(ब) अब प्रश्न यह उठता है कि यज्ञ की प्रचलित प्रक्रिया से निकलने वाली गैसों से उल्लेखनीय हानि क्यों नही होती हैं तथा थोड़ा सा सुगंध तथा औशधिए लाभ आदि कैसे प्राप्त होता है? इसका उत्तर यह है कि यह संभावित रसायनें बहुत ही कम मात्रा मे बनती हैं जिससे उल्लेखनीय हानि नही होती है। यह भी कारण हो सकता है कि यज्ञ करते समय कई कारणों से यज्ञ अग्नि का लौ बार–बार बुझ जाता है, और उतने समय में देशी घी व यज्ञ सामग्री के रसायनों के लगभग 5 से 10 प्रतिशत भाग गर्म होकर, वाष्प यानी धुवाँ बनकर, उड़ कर हवा में फैलते हैं और सुगंध आदि का आंशिक लाभ मिलता हैं, जिसे हम भ्रांतिवश पूरा लाभ समझ लेते हैं। यदि यह सामग्रियां शतप्रतिशत लौ के साथ जलें तो सुगधं आदि लाभ बिलकुल नही मिलेगा।

(स) यज्ञ चिकित्सा पर कई पुस्तकें हैं। समस्त पुस्तकों के अनुसार सामान्य बीमारियों के लिये भी 8–10 दिन सुबह व शाम यज्ञ करना चाहिये। इस यज्ञ चिकित्सा के लिये कम से कम 300 ग्राम गाय का देशी घी व इतना ही हवन सामग्री प्रति एक समय के यज्ञ के लिये आवश्यक है, जिसकी लागत लगभग 600 रूपये प्रति यज्ञ होती है, के अनुसार 10 दिन के प्रातः एंव सायंकाल के लिये लगभग रुपये 12000 आवश्यक होगी। "धुँवायुक्त यज्ञ" यानी धूनी से चिकित्सकीये लाभ के लिये 'आर्यमित्र' साप्ताहिक पत्रिका दिनाकं 17 एंव 24 दिसम्बर 2013 के अंक मे श्री कृष्ण आर्य एम डी आर टी द्वारा लिखे लेख "रोगानुसार हवन धूप" में लिखा है कि अंगारे पर एक चम्मच धूनी सुबह–शाम यानी "धुँवायुक्त यज्ञ" यानी हवन धूप, में मात्र 5 ग्राम यानी एक चम्मच देशी घी व इतना ही हवन सामग्री प्रति एक समय जिसकी लागत लगभग 8–10 रूपये ही होती है, जबकि उतना ही लाभ रुपये 600 के "लौयुक्त यज्ञ" से प्राप्त होता है। इससे लौरहित यज्ञ की उपयोगिता प्रभाव का अंदाजा लगया जा सकता है। इस लेख में विभिन्न बीमारियों के लिये धूनी दिये जाने वाली सामग्रियों की विबरण भी लिख है।

(द) यज्ञ के कुछ पुस्तकों यह बात गलत लिखा हुआ है कि कोयले की अग्नि से जलते समय कार्बन मोनोआक्साइड नामक जहरीली गैस बनती है। लकड़ी के कोयला अधिकाषं कार्बन तत्व होते हैं। यह बगैर लौ के साथ जलता है। खुले स्थान तथा पर्याप्त खुले खिड़की दरवाजों के भवन में जलते समय कोयला के तत्व कार्बन, हवा के आक्सीजन के साथ रसायनिक क्रिया कर कार्बन डाईआक्साइड गैस ही बनाते हैं। कई लोग समझते हैं कि कार्बनमोनो आक्साइड गैस भी बनती है, जो पूर्णतः गलत है, क्योंकि जलन क्रिया बहुत तेजी से नहीं होती है जिससे जलन के लिये पर्याप्त आक्सीजन मिलता रहता है। ऐसा ही इंटरनेट पर उपलब्ध लेखनियों में लिखा है। इसी कारण पहाड़ों पर व मैदानी क्षेत्रों में जहाँ ठंडक बहुत ज्यादा होती है, वहाँ घरों व कार्यालयों में लकड़ी का कोयला जलाया जाता है। अत्यंत ठंड के क्षेत्रों में लोग छोटी सी अंगीठी में लकड़ी का कोयला जला कर गले में लटका कर बाहर काम आदि से निकालते है। कार्बन डाईआक्साइड गैस जहरीली नहीं होती है। पत्थर का कोयला जो जमीन से खनन कर निकाला जाता है उसको जलाने से कुछ कार्बन मोनोआक्साइड गैस बन सकती है। यह अति आवश्यक है, जहाँ कहीं भी लकड़ी का या पत्थर का कोयला जलाया जाय, वह खुला हो या कमरों में पर्याप्त खिड़की आदि हों जिससे जली हुई यानी कार्बन डाईआक्साइड गैसें बाहर निकलती रहे व ताजी हवा अंदर आती रहें जिससे कमरों में लोगों को सांस लेने के लिए पर्याप्त आक्सीजन युक्त हवा मिलती रहे। बंद कमरे में कोई भी कोयला या अग्नि जलाने से जब आक्सीजन की खपत होते होते आक्सीजन कम हो जाती है, तब कोयला आदि को जलाने के लिये पर्याप्त आक्सीजन नही मिल पाती है, तब कार्बन मोनोआक्साइड गैस बनने लगती है क्योंकि इसमें कार्बन डाइआक्साइड की अपेक्षा आधी आक्सीजन की आवश्यकता होती है, परंतु यह गैस जहरीली व दमघोंटू होती है। इसी से बंद कमरे में कोयला या कोई भी अग्नि जला कर सोने से दम घुटने के कारण मोतें होती हैं। इसे इंटरनेट पर भी देखा जा सकता

अतः यज्ञ के प्रयोजन, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये, देशी घी व हवन सामग्री के रसायनों को वायुरुप यानी सूक्ष्मतम कणों में परिवर्तित कर, सुगंध के साथ वातावरण, में चारों ओर हवा में फैलाना है, तो क्या यह प्रयोजन, इसे लौ के साथ जलाने से प्राप्त किया जा सकता है?कदापि नही? इसे बगैर लौ के आग यानी कोयले के या कंडे के आग पर डाल कर सुलगाते यानी धुवाँ करने से ही प्राप्त होगा।

सारषं :– उपरोक्त विबरणों से यही सारषं निकलता है कि यज्ञ के लाभदायक विधि के निर्णय के तीनो तरीकों, कसौटियों के आधार पर, कोयले या कंडो की अग्नि मे आहुति देते हुए "धुवाँयुक्त यज्ञ" ही अतयतं लाभदायक एंव यज्ञ के लक्ष्य को प्राप्त करने वाला पुण्य कार्य है। यज्ञ का मुख्य ध्येय घी एंव हव्य के रसायनों को ऐसी अग्नि में आहुतियाँ दें अथवा अन्य गर्म करने वाले विकल्प जैसे हीटर आदि पर आहुतियाँ देवें, जो उसे सुलगाते हुए धुवाँ करते हुए हवा में फैला सके। दोनों तरह के यज्ञों से मिलने वाले लाभ हानि के परिमापों, मात्राओं का संज्ञान लेते हुए "यज्ञ के सत्य असत्य यानी लाभदायक– हानिदायक" पर गहन विचार कर, यज्ञ की सही व लाभकारक विधि को अपनायें, क्योंकि "सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास–3" के अनुसार गलत विधि से किया गया यज्ञ, पुण्य कर्म नही होगा बल्कि पापमय ही होगा। अतः अनुरोध है कि इस लेखनी पर अपनी शंका राय, टिप्पणी अथवा जो कमी गलती या कोई हानिकारक बात लगे तो उसे, अवश्य ही लिखकर भेजने का कष्ट करें, जिसका मैं उत्तर, निराकरण भेजूगां। सहमति होने पर, यह भी निवेदन है कि इसका प्रचार प्रसार करने का कष्ट करें।

–वेद प्रकाश गुप्ता,
मोबा–9451734531, 8860873963
इमेल–vedpragupta@rediffmail.com

युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत–अमर बलिदानी भगत सिंह

देश-धर्म की बलिवेदी पर मात्र २३ वर्ष की किशोरावस्था में हंसते-हंसते प्राण न्यौछावर करने वाले भगतसिंह का जन्म २७ सितंबर १६०७ को बंगा नामक ग्राम में हुआ जो की वर्तमान में पाकिस्तान में है। आपका परिवार क्रांतिकारियों का परिवार था जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन आपके पिता एवं चाचा के जेल से रिहा होने का समाचार परिवार वालों को प्राप्त हुआ इस कारण आपकी दादी ने आपका नाम भागोंवाला कहा था। आपके पिता का नाम सरदार किशन सिंह तथा माता का नाम विद्यावती कौर था। आपका परिवार सिक्ख पंथ का अनुयायी था किन्तु आपके दादा अर्जुन सिंह जी ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित हो आर्य समाज की वैदिक विचारधारा से जुड़ गये थे कहा जाता है कि आपका यज्ञोपवीत आर्य समाज में हुआ था। आपकी शिक्षा-दीक्षा आर्य समाज के महात्मा हंसराज जी द्वारा लाहौर में स्थापित डी.ए.वी. स्कूल में हुई। परिवार से मिले देशभक्ति और क्रान्तिकारी विचारों के कारण बचपन से ही शस्त्रों के प्रति आपका गहन लगाव था एक दिन पिता को खेत में बीज बोते देखकर पिता से पूछा क्या बन्दूक की खेती नहीं की जा सकती?

अध्ययन के दौरान आपका सम्पर्क लाला लाजपत राय से हुआ। ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त लाला लाजपत राय और रामप्रसाद जी बिस्मिल तथा अन्य वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, करतार सिंह, सराबा आपके आदर्श पुरूष थे। गदर पार्टी की कथाएं, करतार सिंह सराबा का बलिदान, जलियावाला बाग का नृशंस हत्याकांड ने आप पर गहरा प्रभाव डाला आप अपनी पढ़ाई नौवीं कक्षा में छोड़कर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े।

१७ अप्रैल १६१६ को जलियावाला बाग काण्ड के समय आपकी आयु मात्र १२ वर्ष की थी इतनी छोटी सी आयु में आप करीब १२ मील पैदल चलकर जलियावाला बाग पहुँचे थे। इस उम्र में अपने परिवार में क्रान्तिकारियों की किताबें पढ़कर असमंजस में रहते थे कि क्रान्तिकारियों का रास्ता सही है अथवा गांधी जी का ?गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन रद्द कर देने पर अन्य युवाओं की भांति आपको भी रोष उत्पन्न हुआ और आप गरम दल में क्रान्तिकारी विचारों की ओर मुड़ गये। आपने भारत की स्वतंत्रता के कार्य हेतु युवाओं को जोड़ने हेतु नौजवान सभा की स्थापना की। ट्रेन में ब्रिटिश खजाना लूटकर काकोरी काण्ड के नाम से अंग्रेजों की चूलें हिलाने वाले रामप्रसाद बिस्मिल सहित चार को फांसी व १६ अन्य क्रान्तिकारियों को कारावास की सजा से अत्यंत आक्रोशित हुए। क्रांतिवीर करतार सिंह सराबा के सम्पर्क में आने पर उन्होंने वीर सावरकर द्वारा लिखित पुस्तक १८५७ का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पढ़ने के लिये दी, इससे भगतसिंह इतने प्रभावित हुए की बाद के प्रकाशित संस्करणों के लिये आपने भी सहायता की। जून १६२४ में आप यरवड़ा (पूना) जेल में वीर सावरकर से मिले तथा क्रांति की प्रथम गुरू शिक्षा ग्रहण की, वीर सावरकर के क्रांतिकारी दल अभिनव भारत से आपने बम बनाने की कला सीखी तथा आगरा में बम बनाने का कार्य किया।

वीर सावरकर से प्रेरणा पाकर ही आप चन्द्रशेखर आजाद से जुड़ गये तथा अपने द्वारा गठित नौजवान भारत सभा का विलय हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोशिएसन में कर दिया। इस संगठन का उद्देश्य था देश की स्वतंत्रता के लिये सेवाभावी, त्यागी और आवश्यकता पड़ने पर पीड़ा झेल सकने वाले नौजवान तैयार करना था। वर्ष १६२८ में साईमन कमीशन के विरोध में शांति पूर्वक प्रदर्शन करने वाले प्रदर्शनकारियों पर अंग्रेज सरकार ने बर्बरता पूर्वक लाठीचार्ज किया प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय बुरी तरह घायल हो गये जिनकी उपचार के समय मृत्यु हो गई। लालाजी की मृत्यु ने देशभक्त युवा नौजवानों को हिलाकर रख दिया। चन्द्रशेखर, भगतसिंह तथा साथियों की योजना बनी की लाठीचार्ज के जिम्मेदार पुलिस सुपरिडेंट स्काट को मारकर बदला लिया जावें। १७ दिसम्बर १६२८ को करीब सवा चार बजे पहचानने में त्रुटी होने के कारण स्काट के स्थान पर ए.एस.पी. सॉण्डरस को राजगुरू ने सिर में एक गोली मारी तथा भगतसिंह ने ३-४ गोली सॉण्डर्स पर दाग कर उसका काम तमाम कर लालाजी की मौत का बदला ले लिया। इस योजना में आपके साथ थे राजगुरू, चन्द्रशेखर आजाद और जयगोपाल। भगतसिंह यद्यपि रक्तपात के पक्षधर नहीं थे तथा वे कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों से भी प्रभावित थे तथा समाजवाद के पक्के पोषक थे, इस कारण पूंजिपतियों के द्वारा मजदूरों के शोषण के विरूद्ध थे, चूंकि उस समय अंग्रेज सर्वेसर्वा थे, वे नहीं चाहते थे कि भारतीय उद्योग उन्नति कर पाये इस कारण अंग्रेजों की नीति भारतीय मजदूरों पर अत्याचार की रहती थी। ऐसी अंग्रेज नीतियों का विरोध करना स्वाभाविक था। वे और उनके सहयोगी साथियों का विचार था कि रोज-रोज की छुट-पुट घटनाओं और रक्तपात के स्थान पर कोई ऐसा धमाका किया जावें जिसकी गूंज सात समंदर पार भी सुनाई दे और अंग्रेजी हुकुमत पूरी तरह हिलकर रह जाए, इनके लिये उन्होंने बटूकेश्वर दत्त को साथ लेकर ८ अप्रैल १६२६ को केन्द्रीय असेम्बली में ऐसे खाली स्थान पर बम फेंका जिससे किसी की प्राण क्षति न हो, बम फटने के धुएं से हॉल भर गया आपके पास भागने का पूरा अवसर था किन्तु आप भागे नहीं और इंकलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद के नारे लगाये तथा अपने साथ लाये हुए परचे असेम्बली में फेंके जिस पर लिखा हुआ था 'बहरों को सुनाने के लिये धमाकों की जरूरत हैं तथा शान्तभाव से अपनी गिरफ्तारी दी।

साण्डर्स हत्याकाण्ड के बाद से अंग्रेज सरगर्मी से इस हत्याकाण्ड के जिम्मेदारों को तलाश रही थी किन्तु असफल रही थी, नेशनल असेम्बली में बम काण्ड के बाद अंग्रेजों ने अपनी पूरी शक्ति क्रान्तिकारियों के सफाये पर लगा दी। साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति अपनाकर सुखदेव व राजगुरू को भी गिरफ्तार कर लिया गया तथा आप तीनों को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी का दिन निर्धारित किया गया। २३ मार्च १६३१, जेल में भी आप चैन से नहीं बैठ, क्रान्तिकारी बन्दियों के साथ ६४ दिन की भूख हड़ताल अंग्रेजों के अत्याचारों के विरूद्ध की जिसमें आपके साथी यतिन्द्रदास की मृत्यु हुई।

जन विरोध की आशंका में आप तीनों को एक दिन पहले २२ मार्च की शाम करीब ७ बजकर ३३ मिनट पर फाँसी पर लटका कर गुप-चुप तरीके से आप लोगों की लाशों को टुकड़ो में बोरियों में भरकर सतलुज नदी के किनारे मिट्टी का तेल छिड़क कर जलाने का वीभत्स कार्य अंग्रेजों ने किया।

जब आपको फाँसी पर चढ़ाने हेतु ले जाने के लिये आये तब आप रामप्रसाद बिस्मिल की जीवनी पढ़ रहे थे, पुस्तक हवा में उछाल कर ऐसे चल पड़े मानों बिस्मिल से मिलने जा रहे हो। आपने राम प्रसाद बिस्मिल के दिशा-निर्देशों का अक्षरशः पालन किया।

आप तीनों ने फाँसी पर चढ़ने के पूर्व मिलकर गीत गुनगुनाया -

मेरा रंग दे बसंती चोला,
मेरा रंग दे।
मेरा रंग दे बसंती चोला,
माय रंग दे बसंती चोला।

आपको फाँसी पर चढ़ाने से अंग्रेज भी घबरा रहे थे। भगतसिंह की योजना को अंग्रेज समझ चुके थे कि आपको फाँसी पर चढ़ाने से जनता आक्रोशित हों जावेगी, आपको माफी का प्रस्ताव दिया गया जो आपने ठुकरा दिया। गांधी जी चाहते तो आप लोगों को फांसी से बचाया जा सकता था इस कारण भी लोगों में आक्रोश था, लाहौर अधिवेशन में जाते समय लोगों ने विरोध स्वरूप गांधी जी को काले झण्डे दिखाये।

भारत माँ के इस महान् सपूत को बलिदान दिवस पर समस्त देश प्रेमियों की ओर से शत्-शत् नमन्।

स्वागतं कुरु होलिकायाः

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री (महोपदेशक)
(साहित्य अकादमी, राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)
रायबरेली

घृतं शुद्धं दुर्लभं यदि महार्घ तत् किं बुभुक्षसि,
दुग्धमपि नो प्राप्यते सत् भुक्ष्व यत्रं मूलिकायाः
स्वागतं कुरू होलिकायाः।।१।।
सज्जानान् पीडयति नित्यम्, दुर्जनैः समम् अस्ति सख्यम्
पश्य गच्छति पुलिरूथीनाम्, एव भवतः कालिकायाः।
स्वागत कुरू होलिकायाः।।
उग्रवादित इह धरित्र्याम्, जानते नो प्रेम-वचनम्
एकमेव विदन्ति यत् ते, तत् तु वचनं गोलिकायाः
स्वागत कुरू होलिकायाः।।३।।
आततायिभिर नुदिनम्, सा हन्यते जनता बराकी
यत्र देशे पापमाहुः, वधे क्षुद्रपिपीलिकायाः
स्वागतं कुरू होलिकायाः।।४।।
प्रत्यह गच्छति विमाने, साम्प्रतं नेता नवीनः
मुहुः पश्यति साभिलाषम्, शाटिकां परिचारिकायाः
स्वागतं कुरू होलिकायाः।।५।।
नैव चितं सुन्दर यदि, निर्मितं तत् कक्षं क्षुम्यसि
नेह चित्रकरस्य दोषः, एष दोष स्तूलिकायाः।
स्वागतं कुरू होलिकायाः।।६।।
कलियुगीन रामराज्यम्, दुष्ट-धूर्तजनैरूपेतम्
कुरू सुरक्षार्थ प्रबन्धम्, यदि भुशुण्डी-नालिकायाः
स्वागतं कुरू होलिकायाः।।७।।
राष्ट्र-संसदि सांसदास्ते, नैव जनतां चिन्तयते
को वादिल्यति समाधानम्, आत्रदीयं प्रहेलिकायाः
स्वागतं कुरू होलिकायाः।।८।।

''संस्कृति - विमर्श''

संस्कृति के प्राणाधार हैं संस्कार। संस्कार वह क्रिया कलाप है जिसके द्वारा किसी वस्तु-भाषा-व्यक्ति को संस्कृत किया जाता है। संस्कारों के इसी सार-समुच्चय को संस्कृति कहते हैं। जिस प्रकार किसी अज्ञात पदार्थ को आविष्कार से उसे संसार के सामने प्रकाश में लाया जाता है। जिस प्रकार किसी अशुद्ध वस्तु का परिष्कार करके उसे परिष्कृत किया जाता है, उसी प्रकार संस्कृति-पर्यावरण चेतना, पवित्रताव आत्मोत्कर्ष को प्रोत्सहित करती है। संस्कृति हमारे सामाजिक व्यवहार, हमारी भाषा व साहित्य को परिमार्जित करती है। यही नहीं संस्कृति हमारी सूक्ष्म वृत्तियों को विकसित करती है, पाशविकता को मानवीयता की ओर और मानवीयता को देवत्व की ओर अग्रसर करती है। संस्कृति सदैव आदर्श दिशा की ओर इंगित करती है, इसमें शुभ सकारात्मक ध्वनि ही गुंजरित होती है, अशुभ नकारात्मक ध्वनि, को कोई स्थान नहीं है। संस्कृति का शब्द-विन्यास परिष्कृति-सम्यक कृति की फलश्रुति प्रदान करता है। आविष्कार, परिष्कार एवं संस्कार के सुगम त्रेत को उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। कोई जौहरी बहुमूल्य मणि रत्नों की खोज में भूमि की खुदाई कराता है। दीर्घकाल की खुदाई के बाद भूमि की गहराई में छुपे हुए कुछ रत्न प्रस्तर मिलते हैं। यह हुआ उनका आविष्कार वह इन प्रस्तर-कणों की कटाई-छिलाई एवं घिसाई करता है तो उनके ऊपर के मल, विक्षेप की छंटाई हो जाती है। इस परिष्कार क्रिया से परिष्कृत होकर व प्रस्तर-कण श्वेत शुभ्र प्रकाशमान हो रा के रूप में चमकने-दमकने लगते हैं। इनका मूल्य लाखों गुणा अधिक हो जाता है।

सामान्यतया आविष्कार एवं परिष्कार की क्रियायें प्रकृति के जड़ पदार्थो तक ही सीमित रहती हैं। वैज्ञानिक क्षेत्र में भी इनका प्रभाव जगत की चमत्कृत करता रहता है। जब हम चेतन प्राणि जगत पर दृष्टिपात करते हैं, तो वहां पर आविष्कार परिष्कार से कहीं अधिक संस्कार का प्रभाव क्षेत्र दृष्टिगत होता है। संसार की असंख्य जीव जन्तुओं की योनियों को तीन श्रेणियों में परिगणित किया जा सकता है। एक-वे अधोमुखी हैं जिनके सिरभूमि में गड़े रहते हैं, दूसरे व समुमुखी है जिनके सिर भूमि के समानान्तर होते हैं, तीसरे व ऊर्ध्वमुखी है, जिनके सिर आकाश की ओर उठे रहते हैं। प्रथम में समस्त वृक्ष-वनस्पति द्वितीय में समस्त कीटपतंग-पशु-पक्षी और तृतीय में समस्त मानव प्राणी आते हैं।

प्रथम व द्वितीय कोटि के प्राणी अपने जन्मजात स्वाभाविक ज्ञान के अनुसार अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर लेते हैं। उनके आहार-आराम आरक्षा प्रजनन की क्रियायें स्वाभाविक रूप से चलती रहती हैं। ऊर्ध्वमुखी मनुष्य को स्वाभाविक के साथ-साथ ईश्वर ने नैमित्रिक ज्ञान का वरदान भी दिया है, जिसकी अपेक्षा से वह रंक से राजा बन सकता है और जिसकी उपेक्षा से वही राजा से रंक हो जाता है।

इसीलिए महर्षि मनु ने कहा है - जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात्द्विज उच्यते'' अर्थात् सभी मनुष्य शूद्र के रूप में जन्मते हैं, किन्तु संस्कारों के द्वारा ही वे द्विज बनते हैं। शूद्र व द्विज शब्दों को किसी जाति विशेष से जोड़ना- महर्षि मनु का अभिप्राय नहीं है। शूद्र वही है, जो जिस शरीर के साथ जन्म लेता है, उसी के श्रम-स्वेदविन्दुओं से द्रवित होकर दूसरों की सहायता करता है। स्वल्पभुगतान पर जीवन यापन कर लेता है। द्विज वह है जो एक बार माता-पिता से जन्म लेता है और दूसरी बार संस्कारों के गर्भ से जन्म लेकर संस्कृति के प्रांगण में फलता-फूलता व बीज बिखरेता है। यतोऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धिः से धर्मः'' (वै०दर्शन) अर्थात् जिससे लौकिक सुख व पारलौकिक आनन्द की सिद्धि होती है- वह धर्म है। धर्म बेतार का वह तार है जिसमें संस्कृति रूपी विद्युत प्रवाहित रहती है। धर्म शरीर आवरण के रूप में सृष्टि को धारण करता है तथा संस्कृति आत्मा स्वरूप उसमें संचरण करती है। जैसे साधारण सोने को अग्नि में तपकर कुन्दन बनाया जाता है, वैसे ही शिशुओं को संस्कार की भट्टी के व्रत-ताप से उनके दुर्गुणों को दूर कर तथा सद्गुणों को पूर कर संस्कृति का श्रृंगार बना दिया जाता है।

बात सोलह या न्यूनाधिक संस्कारों की ही नहीं, इनको करके सम्प्रदाय के लोग अपनी सन्तान को श्रेष्ठ बनाने का उपक्रम करते हैं। वास्तव में यह निरन्तर चलते रहने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य ज्ञानेन्द्रियों द्वारा हरक्षण अपने मन-मस्तिष्क में सूचनाओं का समरण करता है। वह जैसा देखता-सुनता सूंघता खाता स्पर्श करता है, वैसा वह सोचने लगता है। जैसा वह सोंचता है, वैसे ही उसके विचार बनते हैं जैसे उसके विचार होते है, वैसे ही उसके संस्कार बनते हैं, जैसे उसके संस्कार होते हैं, वैसा ही उसका व्यवहार होता है जैसा उसका व्यवहार होता है, वैसा ही उसका चरित्र बनता है। मानवीय दैव्यजन्म (ऋ० १०,५३.६) के अनुसार मननशील मनुष्य दिव्य मनुष्यों को जनम देते व निर्माण करते हुए संस्कृत करते चले जाते हैं, तो यही देश क्षेत्र विशेष की सामूहिक संस्कृति कहलाने लगती है।

मानवरूपी संचरण शील मुद्रा के दो पार्श्व हैं, एक ओर संस्कृति, दूसरी ओर चरित्र है। मुद्रा का अग्र या पृष्ठ, कोई भी भाग असामान्य होने पर वह प्रचलन से बाहर हो जाती है। दोनों पार्श्व सम्यक न होने पर मानव की भी यही स्थिति हो जाती है वह समाज के लिए अवांछनीय हो जाता है। स्वामी विवेकानन्द भारत की महान संस्कृति का सन्देश लेकर अमेरिका गए थे। उनकी अलमस्त वेशभूषा एवं व्यवहार को देखकर वहां के निवासी उनको कोई विचित्र प्राणी समझकर हास्य विनोद में मग्न हो जाते थे। ऐसे ही एक अवसर पर उन्होंने नागरिकों को सदा-सदा के लिए सचेत कर दिया था।

अर्थात् आपके देश में दर्जी परिधान पहनाकर सम्य बनाता है, किन्तु भारत जहां का मैं निवासी हूं वहां मनुष्य को चरित्र नैतिकता एवं उसके आध्यात्मिक मूल्य उसे सम्य व संस्कृत बनाते हैं।

कई बार सभ्यता एवं संस्कृति को एक समझ लिया जाता है। जैसे कोई फल ऊपर से

शेष पृष्ठ.....८

पृष्ठ.....२ का शेष

जीवात्मा पर अंकित सभी पाप व असत्य कर्मो के संस्कार रूपी मल-विक्षेप अहंकार नष्ट व दग्ध-बीज हो जाते हैं। यह स्थिति ईश्वर का ध्यान करने, ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभावानुसार अपना आचरण सुधारने वा ईश्वर के गुणों के अनुरूप करने व अपना सारा समय परोपकार व दुखियों की सेवा में लगाने पर ही प्राप्त होती है। समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार हो जाने पर मनुष्य जन्म मरण के चक्र से छूट जाता है और ईश्वर के निरन्तर आनन्द रूपी सान्निध्य को प्राप्त कर उसमें ही आनन्द को भोगता है। यही मनुष्य जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य वा परम उद्देश्य है। महर्षि दयानन्द इसी मार्ग पर चले और कृतकार्य हुए। हमारे सभी ऋषि-महर्षि - योगी-सन्त भी इसी मार्ग का अवलम्बन अपने-अपने जीवन में करते रहे। यह साधना व कार्य कुछ लोगों के ही करने के लिए नहीं अपितु सभी मनुष्य, स्त्री वा पुरुष इसके अधिकारी व पात्र हैं। कभी न कभी तो हमें इसे अपनाना ही है क्योंकि इसके बिना जीवात्मा की मोक्ष की यात्रा पूरी नहीं होती। वह कर्मफल बन्धन में पड़ा रहता है। यह मोक्ष प्राप्ती ही मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य है। यहां यह भी बता दें कि हम सभी मनुष्यों को इससे पूर्व संसार की सभी योनियों में अनेक-अनेक बार जन्म हो चुके हैं। अनेक बार हम मोक्ष में भी गये है और अवधि पूरी होने पर लौटे हैं। वहां से आकर हम फिर कर्म के बन्धनों में फंस कर वर्तमान स्थिति को प्राप्त हुए हैं। यह तथ्य सत्य है जिसे जानकर सद्कर्मो सहित ईश्वर की सच्ची वैदिक विधि से उपासना में जुट जाना चाहिये जिससे कालान्तर में मोक्ष प्राप्त हो सके। अन्य मार्ग मंजिल पर पहुंचाने के स्थान पर लक्ष्य से दूर करते हैं। अतः केवल वैदिक साधनों का ही अवलम्बन करना उचित है।

पृष्ठ.....३ का शेष

किया और उग्ररूप धारण करके गरमदल बना लिया जिसके प्रभाव में सारे क्रान्तिकारी संगठन प्रेरित होकर शीघ्रता से कार्य करने लगे यह प्रभाव महर्षि दयानन्द सरस्वती का ही था जो इतने ऊचे पद पर जाने के बाद भी उनकी विचारधारा से न विमुख हुए न समझौता वादी नीति को अपनाया अपितु अपनी बात को आत्म विश्वास के साथ प्रस्तुत करते थे महात्मा गांधी जी से भी आपका सम्पर्क रहा १६२० के असहयोग आन्दोलन में उनका भरपूर सहयोग दिया और डी.ए.वी. से धीरे-धीरे मुक्त होते चले गए कार्याधिम्य देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रेरण दे रहा था अन्य कार्यो को गौणकर दिया आपने पंजाब में किसान जागृति अभियान प्रारम्भ किया सरदार अजीत सिंह और आपके जोशीले भाषणों से सरकार कांप उठी और आपको जेल में बन्दकर दिया मण्डले जेल में दोनों अपनी ऊर्जा बढ़ाते रहे जनता का विद्रोह होने पर आपको रिहा करना पड़ा फिर आप जनप्रिय नेता बन गए लोगों ने आपको सिर आँखों पर उठा लिया। आर्य समाज के माध्यम से आपने जनहित कार्य प्रारम्भ किये १८६१ का अकाल सभी को याद है अनाथ बच्चों के लिए फिरोजपुर में आर्य अनाथालय की स्थापना की गई और उन्हें उसमें प्रवेश दिलाकर उनका पालन पोषण किया।

कांगड़ा का भयंकर भूकम्प १६०५ में तथा १६०७ में उड़ीसा - म०प्र० उ०प्र० में भयंकर अकाल पड़ा उसमें राहत सामग्री द्वारा सहयोग सभी को याद है। अब लाला जी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की तरह उभर चुके थे आपकी ख्याति पूरे देश में युवकों में एक विशेष उत्साह पैदा करती थी आपके दर्शन और भाषण सुनने के लिए हजारों की संख्या में लोग पैदल ही दौड़कर पहुंच जाते थे। १६२४ में आपने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए स्वामी श्रद्धानन्द जी पं० मदन मोहन मालवीय और लाला लाजपत राय आप तीनों ने मिलकर तुष्टीकरण की नीति का घोर विरोध किया तथा हिन्दू महासभा बनाकर उसमें सहयोग प्रदान किया आप उसके अध्यक्ष भी रहे। १६२८ में इग्लैण्ड से साइमन कमीशन यहां भेजा गया इसके विरोध की पूर्ण योजना बनाई गई ३० अक्टूबर १६२८ को कमीशन लाहौर आया लाला जी के नेतृत्व में रेलवे स्टेशन पर ही भारी भीड़ में ''साइमन कमीशन वापस जाओ'' के नारों से आकाश को गुंजा दिया। अंग्रेजों ने निहत्थे लोगों पर लाठियां बरसाई और लाला लाजपत राय जी को अधिक चोंटे आई उन्होंने कहा था कि मेरे शरीर पर लगी १-१ लाठी बिट्रिश शासन के कफन की कील साबित होगी और १७ नवम्बर को देश की आजादी का स्वप्न देखते हुए अन्तिम श्वास लिया।

आपका व्यक्तित्व बहु आयामी था आप श्रेष्ठ वक्ता प्रभावशाली लेखक, सर्वप्रियनेता, कार्यकर्त्ता, समर्पित समाज सेवक, शिक्षा, शास्त्री, गम्भीर चिन्तक तथा विचारक थे। आपने उर्दू-अंग्रेजी, हिन्दी में बहुत ग्रन्थ लिखे हैं आपके कई ग्रन्थों पर सरकार ने प्रतिबन्ध भी लगाये ऐसे प्रभावशाली लेखक के रूप में भी आपको इसलिए नमन करता हूँ कि सामाजिक व्यक्ति को लिखने पढ़ने का समय कहा मिलता है पर आपने एक प्रेरणा पुरुष बन हमें प्रभावित किया है आपकी ऊर्जा आज भी हमें प्रेरणा प्रदान कर रही है परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि लाला जी की ऊर्जा हमारे अन्दर भी आये और हम भी आपकी तरह देश-धर्म की सेवा कर महर्षि के स्वप्नों को साकार कर सकें पुनः उनके प्रति सादर नमन एवं श्रद्धा समर्पण।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२- २८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सभा ... ३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

आर्य समाज गुलावठी ने मनाया होलिकोत्सव

आर्य समाज गुलावठी में होलिकोत्सव सुनील कुमार मंत्री आर्य समाज गुलावठी की अध्यक्षता में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें नगर के सभी आर्य नर नारियों ने हिस्सा लिया और यज्ञ की आहुति देकर एक दूसरे से गले मिले और होली की शुभ कामनायें दी। स्थानीय विद्वानों ने होली पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेदीय वृहद यज्ञ का आयोजन

बहादुरगढ (झज्जर) नगर में स्थित आत्म शुद्धि आश्रम में २८ मार्च से ३ अप्रैल १६ तक निःशुल्क ध्यान योग शिविर एवं अथर्ववेदीय वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया है। जिसमें यज्ञ की ब्रह्मा डा. स्वामी देवव्रत जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य वीर दल रहे। शिविर के मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रदेव, आचार्य राजहंस मैत्रेय, आचार्य रवि शास्त्री, भजनोपदेशकों में पं. रमेश चन्द्र जी कौशिक, श्री रामानन्द जी, संगीता आर्या, श्री लक्ष्मण प्रसाद नरेला, श्री रामदेव आर्य एवं आश्रम के ब्रह्मचारी होंगे। योग शिविर प्रातः ५ बजे से ७ बजे तक पुनः प्रातः ७:३० से १० बजे तक यज्ञ भजन एवं प्रवचन। उपरोक्त अवसर पर मल्टीमीडिया हाल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन मुख्य आकर्षण होगा। उपरोक्त कार्यक्रम की जानकारी श्री सत्यानन्द आर्य प्रधान ट्रस्ट आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ने दी।

आर्य समाज बहादुरपुर (मुजफ्फरनगर) का 22वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बहादुरपुर मुजफ्फरनगर का २२वां वार्षिकोत्सव दिनांक १६ व २० मार्च २०१६ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

उत्सव में श्री राजवीर सिंह आर्य (महसौली) बहन सावित्री आर्या (लोनी), आचार्य गुरुदत्त जी, स्वामी सत्यवेश जी स्वामी भद्रानन्द जी, स्वामी योगानन्द जी, श्री रामपाल शास्त्री, श्री ओम प्रकाश शास्त्री आदि अनेक भजनोपदेश व विद्वानों के अमृतमय उपदेशों से आये श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गये और अपने आचरण में सुधार का संकल्प लेकर गये।

कार्यक्रम में प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक हवन भजन व प्रवचन दोपहर ३ बजे से सायं ६ बजे तक गौरक्षा व राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा युवा सम्मेलन व व्यायाम प्रदर्शन आदि अनेक कार्यक्रम हुए।

नरेन्द्र सिंह आर्य, मंत्री

प्रो. रासासिंह कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ उपाधि से सम्मानित

अजमेर अलवर में महर्षि दयानन्द की विचारधारा के अनुरूप वैदिक विद्या मंदिर तथा आर्य कन्या विद्यालय समिति के संरक्षक तथा अनेक शिक्षण संस्थाओं के उन्नायक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व प्रधान तथा राजस्थान के सुप्रसिद्ध ख्यातिप्राप्त नेता एवं स्वाधीनता संग्राम सेनानी की स्मृति में गठित स्व. छोटू सिंह आर्य शारदा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा उनकी नवम् पुण्य तिथि पर मंगलवार दिनांक २३ फरवरी २०१६ को आर्य समाज अलवर में आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में ''षष्टम सम्मान समारोह'' में आर्य समाज अजमेर के प्रधान कर्मठ आर्यवीर वैदिक विद्वान, प्रखर वक्ता एवं समाजसेवी तथा पांच बार विजयी रहकर अजमेर संसदीय क्षेत्र से लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने वाले पूर्व सांसद प्रो. रासासिंह रावत को कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ की उपाधि से सम्मानित करते हुए उन्हें अभिनन्दन पत्र तथा ११०००/- रूपये तथा शाल एवं ओ३म् पट्टिका धारण करवा मानव कल्याण की कामना से ऋचाओं का पाठ करते हुए गौरवान्वित किया गया।

इस ट्रस्ट द्वारा अब तक यह सम्मान पूर्व में स्वामी सुमेधानन्द सीकर, कैप्टेन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, डा. भवानी लाल भारतीय, प्रो. धर्मवीर आर्य मंत्री परोपकारिणी सभा अजमेर एवं श्री अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर को प्राप्त हो चुका है।

७५ वर्षीय प्रो. रासासिंह को यह सम्मान उनके द्वारा आर्य समाज अजमेर दयानन्द बाल सदन (अनाथ आश्रम) आर्य शिक्षण संस्थाओं के कई वर्षो तक क्रमशः अवैतनिक चेयरमैन, अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष आदि के रूप में सेवा देने, अपने गुरु दत्तात्रेय वाब्ले के प्रति सच्ची निष्ठा रखते हुए हिन्दी रक्षा आन्दोलन में पौने दो माह जेल काटना, सती विरोधी देवराला पद यात्रा में सक्रिय भागीदारी, आर्य संस्थाओं के निरन्तर विकास, डी.ए.वी. के सफल प्रधानाचार्य के रूप में उत्तम परीक्षा परिणाम एवं अनेक उपलब्धियों के फलस्वरूप १९८९ में राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित होने, आर्य समाज स्थापना शताब्दी तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर एक आर्यवीर और नेता के रूप में भरपूर सहयोग देना, पांच बार बेदाग छवि एवं ईमानदार रहते हुए लगातार अजमेर संसदीय क्षेत्र से सांसद चुने जाने तथा संवेदनशील, सेवाभावी एवं मानवीय मूल्यों के पालक, निश्छल एवं सच्चरित्र व्यक्ति, आर्यवीर दल राजस्थान के संरक्षक, आर्य महासम्मेलनों शताब्दी अवसरों, उत्सवों आदि में एक प्रभावी विद्वान के रूप में भाग लेने आदि के उपलक्ष्य में दी गई सेवाओं के रूप में प्रदान किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज अलवर आर्य शिक्षण संस्थाओं अलवर के माननीय पदाधिकारीगण जिले के आर्य नेतागण तथा सैकड़ो स्त्री-पुरुष उपस्थित थे।

पृष्ठ........७ का शेष

रंग-रूप एवं आकार में बहुत आकर्षित करता है, किन्तु चखते ही मुंह कड़ुआ हो जाता है और फेंक दिया जाता है। ऐसे ही शरीर का रूपाकर्षण सभ्यता समझनी चाहिए और फल के अन्दर व्याप्त सुगन्धित मधुर पोषक रस को संस्कृति रूपी शक्ति समझनी चाहिए। इसके लिए जन्मकाल से ही अभिभावकों को सतर्क रहना पड़ता है। इस ध्येय से शिक्षा की अपरिहार्य आवश्यकता है। शिक्षा से साधारण तात्पर्य सीखना-सिखाना, सीख देना और आवश्यक होने पर दण्ड देना। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा की जो परिभाषा दी है वह सभी मानवीय पक्षों का आच्छादन करती है- जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती हो और अविद्यादिदोष छटें-वह शिक्षाई। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में उन्होंने लिखा भी है -

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये वको यथा।।

शरीर से दुर्बल व्यक्ति भी अपनी विद्या जनित संस्कृति द्वारा शीर्ष पद का अधिकारी बन जाता है। प्रधान मंत्री मोदी ने विकलांग को दिव्यांग की संज्ञा देकर अपनी सहृदयता का परिचय दिया है। कभी इसके लिए राजा जनक को भी बाध्य होना पड़ा था। उनकी वृहद सभा में एक बालक अष्टावक्र ने अभी द्वार में प्रवेश ही किया था, कि सभी सभासद् उनको देखकर खिल खिलाते हुए हंसने लगे। कारण यह था, कि वह बालक अपने शरीर के आठ अंगों से टेढ़ा था। जब सभा की सामूहिक हंसी थम गयी, तब अष्टावक्र ने अट्टास करते हुए अपनी हंसी गुज्जायमान कर दी। बाद में राजा जनक ने नम्रता पूर्वक अष्टावक्र को सम्बोधित करते हुए, उनसे पूंछ लिया- अष्टावक्र। सभा तो तुम्हारे इस वक्रातिवक्र शरीर को देखकर हंस पड़ी, पर तुम क्यों हंसे ? बताइए ?अष्टावक्र ने उत्तर दिया - राजन् ! आप विदेह कहलाते हैं, और मैं यहां विद्वानों की सभा समझकर आया था, पर यहां तो सभी चर्मकार दिखाई दिए, जिन्होंने मेरे शरीर को देखा, मेरी अन्तरात्मा के सौन्दर्य ज्ञान को नही आंका। राजा जनक ने बालक अष्टावक्र का क्षमापूर्वक स्वागत किया और उनसे ज्ञानोपदेश ग्रहण किया। आध्यात्मिक संस्कृति साहित्य में अष्टावक्र गीता का प्रमुख स्थान है।

साक्षर लोग सुशिक्षित होकर एक से एक उपयोगी चमत्कार करते देखे जाते हैं, पर वे तब अशिक्षित ही रह जाते हैं, जब वे अपने ज्ञान का दुरूपयोग अन्याय अपमिश्रण एवं अत्याचार के लिये करते हैं। इसके विपरीत निरक्षर लोग प्रशिक्षित होकर अपनी सहज सुलभ बुद्धि से उत्तम रचनात्मक कार्य कर लेते हैं। लोक प्रिय ग्रन्थ पंचतंत्र में एक आख्यान आता है। चार भाई थे। तीन भाई पढ़े लिखे विशेषज्ञ थे, चौथा छोटा भाई अंपढ़ किन्तु बुद्धिमान था। इसीलिए वे छोटे भाई से लगाव नहीं रखते थे। जब वे धनोपार्जन के लिए गांव से किसी नगर में जाने लगे, तो भी कठिनाई से साथ ले जाने को तैयार हुए। मार्ग में एक जंगल पड़ा वहां कुछ अस्थियां पड़ी देखकर ढांचा विशेषज्ञ भाई ने अस्थियों को क्रमानुसार व्यवस्थित करके पशु विशेष का अस्थिजाल खड़ा कर दिया, दूसरे रसानज्ञ भाई ने उस पर मास-त्वचा का आवरण चढ़ा दिया। तीसरे भाई प्राणवायु विशेषज्ञ को छोटे भाई ने बहुत रोका, सावधान किया। बोला, इस जानवर को पहचान के बाद भी आप जीवित करना चाहते हैं। विद्या का अभिमान आप लोगों को खा जायेगा। छोटे भाई ने पेड़ पर चढ़कर अपने जीवन को बचा लिया, जबकि प्राण प्रतिष्ठा होते ही कालान्तर से क्षुधित शेर ने तीनों विशेषज्ञ भाईयों को अपना आहार बना लिया।

संस्कृति-आन्तरिक, आध्यात्मिक एवं त्याग की प्रतीक है, जबकि सभ्यता बाह्य, भौतिक एवं भोग पर आधारित है। महाविद्या तक ए०के० ४७ राईफल की खोज करने वाले माईकेल कलष्कि निकोव को तब बड़ी निराशा हुई, जब आतंकवादियों द्वारा उसका दुरुपयोग होने लगा। उन्होंने कहा था कि ''यदि मै। किसानों के उपयोग का अच्छा यन्त्र आविष्कृत करता तो मुझे अधिक सन्तुष्टि होती (वेदवाणी नवम्बर-२०११) सम्पूर्ण कथ्य का चार बिन्दुओं में सार-समाहार करके लेखनी को विश्राम देना उचित समझता हूँ।

न जियो न जीने दो - विष्कृति है,
जियो किन्तु जीने न दो - विकृति है।
जियो और जीने दो - प्रकृति है,
न जियो किन्तु जीने दो - संस्कृति है।

देव नारायण भारद्वाज

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।